सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

मई, 2016 वर्ष 15 अंक 03

कहता है शाबान

कर तैयारी रमज़ाँ की तू कहता है शाबान
रोज़े रखना पूरे पूरे रब का है फरमान
काम तू कर ले आगे पीछे मेहनत वाले काम
कोशिश करना काम है अपना रब का ले कर नाम
हिम्मत वाले मदद हैं पाते हिम्मत न तू छोड़
जाइज़ रोज़ी पाने को तू मेहनत कर जी तोड़
माहे मुबारक सर पर है तू उसके लिए कुछ जोड़
हुक्म खुदा का मान ले प्यारे मुंह न उससे मोड़
नबी पे रब की रहमत उतरे लाखों उनपे सलाम
दिल में उनकी रहे महब्बत उनका रहूं मुदाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
विकास की सरकारी परियोजनायें	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	06
दीने इस्लाम का मिज़ाज	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी	09
ज्ञान तथा कला में मुसलमानों	मौलाना सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	11
क़ौम में उलमा का स्थान	हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0	13
बुख़्ल (कंजूसी)	हाशमा अंसारी	15
मोमिन के दस गुण	रुक़य्या अब्दुल गफ़्फ़ार	16
अपना काम ख़ुद करें	मौ0 नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	18
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	20
गणित की ज़ुबान में कुर्आन के	ई0 जावेद इक़बाल	26
लहसुन के लाभ	इदारा	29
स्वरचित महदी तथा ईसा	इदारा	32
प्यारे नबी की बातें (पद्य)	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	39
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

सूर-ए-आले इमरानः

अनुवाद- वहीं ज़करिया ने अपने पालनहार से दुआ की ऐ मेरे पालनहार! अपने पास से मुझे अच्छी संतान प्रदान कर बेशक तू दुआ का ख़ूब सुनने वाला है(38) फिर एक दिन जब वे कोठरी में नमाज़ पढ़ रहे थे तो फरिश्तों ने उन्हें आवाज़ दी कि अल्लाह आपको यहया का शुभ समाचार सुनाता है जो अल्लाह के एक कलिमह की पुष्टि (तस्दीक़) करेंगे(1), सरदार होंगे और मन पर बड़ा काबू रखने वाले होंगे और नेकों में एक नबी होंगे(39) उन्होंने कहा ऐ मेरे पालनहार! मेरे लड़का कैसे होगा जब कि मैं बूढ़ा हो चुका और मेरी पत्नी बांझ है, उसने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है(40) उन्होंने कहा ऐ मेरे पालनहार! मेरे लिए कोई निशानी बता दीजिए, उसने कहा कि तुम्हारी निशानी यह है कि तुम तीन दिन लोगों से इशारे के अलावा बात न कर सकोगे और अपने पालनहार को ख़ूब याद करो और शाम व सुबह उसकी पवित्रता बयान करो(41) और जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरियम! अल्लाह ने आपको चुन लिया है और आपको पवित्रता प्रदान की है और सारे संसार की औरतों पर आपको चुना है(42) ऐ मरियम! अपने पालनहार की इबादत में लगी रहिये और सजदे कीजिए और रुकूअ़ कीजिऐ(2)(43) यह ग़ैब की वह ख़बरें हैं जिनको हम आपकी ओर भेज रहे हैं और आप उनके पास उस समय न थे जब वे इसलिए अपने कलम डाल रहे थे कि कौन मरियम का संरक्षण (किफ़ालत) करेगा और उस समय भी आप उनके पास न थे जब वे झगड़ा कर रहे थे(3)(44) जब फरिश्तों ने मरियम से कहा था कि अल्लाह आपको अपने पास से कलिमह (शब्द) कुन (हो जा) की खुशख़बरी देता है उसका नाम मसीह पुत्र मरियम होगा, दुन्या व आख़िरत में वह इज़्ज़त वाला होगा और (अल्लाह के दरबार) में क़रीबी लोगों में से होगा(45) वह गोद में लोगों से बातचीत करेगा और अधेड़ उम्र हो कर भी और वह नेक लोगों में होगा(4)(46) वे बोलीं ऐ मेरे पालनहार! मुझे लड़का कहां से होगा मुझे तो किसी आदमी ने छुआ तक नहीं? उसने कहा कि इसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है जब वह किसी चीज़ का फैसला कर लेता है तो बस उससे कहता है हो जा बस वह हो जाती है(47) और वह उसे किताब व हिकमत और तौरेत व इंजील की शिक्षा देगा(48) और वह बनी इस्राईल के लिए पैग़म्बर होगा (जो लोगों से कहेगा) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से निशानी लेकर आया हूं, मैं तुम्हारे लिए गारे से पक्षी का

रूप बनाता हूं फिर उसमें फूंक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुक्म से पक्षी बन जाता है, और पैदाइशी अंधे और कोढ़ी को ठीक करता हूं और अल्लाह ही के हुक्म से मुर्दे को ज़िन्दा कर देता हूँ[5] और जो तुम खाते हो और अपने घरों में इकट्ठा करके रखते हो वह सब मैं तुम्हें बता देता हूँ, बेशक इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम मानते हो(49) जब कि मैं उस चीज़ को भी सच बताता हूं जो मेरे सामने तौरेत (के रूप में मौजूद) है और मैं (इसलिए भी आया हूँ) ताकि उन कुछ चीज़ों को जो तुम पर हराम की गई थीं अब मैं उनको हलाल करूँ[6] और मैं तुम्हारे पालनहार की निशानी ले कर आया हूं तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो(50) बेशक अल्लाह हमारा भी पालनहार है और तुम्हारा भी पालनहार है, तो उसी की उपासना (बन्दगी) करो यही सीधा रास्ता है(51) जब ईसा ने उनके इन्कार को महसूस किया तो उन्होंने कहा कौन अल्लाह की राह में मेरी सहायता करने वाले हैं? हवारियों[7] ने कहा हम हैं मदद करने वाले अल्लाह के (दीन की), हम अल्लाह पर ईमान लाए और आप गवाह रहें कि हम मुसलमान हैं(52) ऐ हमारे पालनहार! तूने जो कुछ भी उतारा हम उस पर ईमान लाए और हमने रसूल (संदेष्टा) की बात मानी बस तू हमको मानने वालों में लिख दे(53) ।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1.अल्लह के कलिमह का मतलब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हैं जो बिना बाप के केवल कलिमह (शब्द) कुन (हो जा) से पैदा हुए, हज़रत यह्या उनसे पहले हुए और उन्होंने हज़रत ईसा के आने की पुष्टि की।

2. हज़रत मरियम के संबंध के कारण बीच में हज़रत ज़कारिया अलैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान हुआ, अब दोबारा हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम का उल्लेख हो रहा है ।

3. हज़रत मरियम की माँ जब उनको लेकर मस्जिद गईं तो उनके हालात सुन कर सबको उनके संरक्षण (किफ़ालत) की चाहत हुई और इस पर विवाद हुआ और बात इस पर ठहरी कि वे सब बहते पानी में अपने अपने क़लम डालें जिन से वे तौरेत लिखते हैं, सब ही ने डाले वे बहाव पर बहने लगे, हज़रत ज़कारिया ने डाला वह उलटा बहा बस उनके हक़ में फैसला हो गया।

4. गोद में बात करना ज़रूर आम प्रवृत्ति के विपरीत बात है लेकिन अधेड़ आयु के आदमी के लिए बात करना कोई विशेष बात नहीं, हाँ हज़रत ईसा के बारे में उल्लेख पवित्र कुर्आन का मोज़िजा है, इसमें उन लोगों का खण्डन किया जा रहा है जो हज़रत ईसा के फांसी पर चढ़ जाने का अक़ीदा (विश्वास) रखते हैं उनको सूली के लिए ले जाया गया तो वह जवान थे अधेड़ उम्र में बात करना इस बात की ओर इशारा है कि वे उठा लिए गए अब दोबारा

शेष पृष्ठ .....14...पर...

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि हम लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ पूछने के लिए रोक दिये गये थे (ऐसा हमारे हित के लिए ही किया गया था) अतः हम लोगों को इस बात से खुशी होती थी कि कोई आये और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ पूछे और हम लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनका उत्तर सुनें, बस एक व्यक्ति देहात से आया और उसने अल्लाह के रसूल को सम्बोधित करके कहा, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप का आदमी मेरे पास आया और उसने कहा, कि आपका कहना है कि अल्लाह ने आपको अपना रसूल बना कर भेजा है, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा उसने सच कहा, उस व्यक्ति ने पूछा कि यह आकाश किसने बनाया? आपने उत्तर दिया अल्लाह ने, उसने पूछा यह धरती किसने बनाई? आपने उत्तर दिया अल्लाह ने, उसने पूछा यह पहाड़ किसने बनाए? आपने उत्तर दिया अल्लाह ने, उसने कहा जिस अल्लाह ने आकाश, धरती और पहाड़ बनाए उसकी कसम क्या उसी ने आप को रसूल बनाया है? आपने उत्तर दिया हाँ, उसने कहा आपके आदमी ने बताया कि दिन व रात में हम पर पाँच वक्त की नमाज़ें हैं आपने उत्तर दिया सच कहा, उसने कहा जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी कसम क्या उसी ने आपको इसका आदेश दिया है? आपने उत्तर दिया हाँ, उसने कहा आपके आदमी ने कहा, हम पर हमारे मालों की ज़कात है, आपने उत्तर दिया, उसने सच कहा उसने कहा जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी कसम क्या उसी ने आपको इसका आदेश दिया है? आप ने उत्तर दिया हाँ, उसने कहा आपके आदमी ने कहा हम पर हर साल रमज़ान में रोज़े हैं, आपने कहा, उसने सच कहा, उस आदमी ने पूछा जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी कसम क्या उसीने आपको इसका आदेश दिया है? आपने उत्तर दिया हाँ, उस व्यक्ति ने कहा कि आपके आदमी ने कहा कि हज के रास्ते पर सामर्थ्य हो तो हम पर हज है, आपने कहा, उसने सच कहा, उस व्यक्ति ने पूछा कि जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी कसम क्या उसीने आपको इसका आदेश दिया है? आपने उत्तर दिया, हाँ, रावी हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि वह यह कहते हुए लौटा कि, जिसने आपको रसूल बनया उसकी कसम इन बातों पर न तो कुछ बढ़ाऊँगा न घटाऊँगा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि अगर उसने

शेष पृष्ठ .....14...पर...

विकास की सरकारी परियोजनाएं और मुस्लिम समुदाय

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

बात अपने देश के मुसलमानों की है, आमतौर से कहा जाता है कि मुसलमान पसमांदा (पिछड़े हुए) हैं बाज़ कमेटियों ने भी इस विषय पर कार्य किया उनकी रिपोर्ट भी यही है कि मुसलमान पसमांदा हैं सरकारी तौर पर तो यह बात मान ली गई है कि इस देश में बड़ी संख्या में लोग पिछड़े हुए हैं उनमें मुसलमान भी हैं। सरकार बराबर प्रयास कर रही है कि पिछड़ा वर्ग उन्नति करे और इसके लिए सरकार ने बहुत सी योजनाएं चला रखी हैं हम इस लेख में मुसलमानों की पसमांदगी की समीक्षा करेंगे।

इस्लाम की नज़र में मुसलमानों का पिछड़ापन–

मुसलमानों के पास मानव जाति के लिए अल्लाह का विधान (ईश विधान) है, उनको चाहिए था कि वह इस देश की जनता का वैधानिक तथा नैतिक नेतृत्व करते और लोगों को अल्लाह के कानून पर चलाते, हमारे देश में सवा अरब लोग बसते हैं, उनमें मुसलमानों की संख्या केवल 25 करोड़ बताई जाती है और देश की शासन व्यवस्था लोकतांत्रिक है। अतः इस देश में मुसलमानों का सत्ता में आना असम्भव है यह उनकी विवशता है जिसे अल्लाह क्षमा करेगा।

अल्पसंख्यक होते हुए हम यदि सर्वे करें तो मुसलमानों की अच्छी खासी संख्या डाक्टरों, इंजीनियरों तथा बड़े व्यापारियों की पाएंगे। निःसंदेह उनमें करोड़ पती भी हैं और अरब पती भी, इसी प्रकार यद्यपि अपनी कुल संख्या के अनुपात से सरकारी नौकरियों में बहुत कम हैं लेकिन उनकी भी अच्छी संख्या है, वह करोड़ पती तो नहीं परन्तु लाखों का बैलेंस अवश्य रखते हैं इन सबको हमारा समाज यही कहेगा कि यह स्थिति पसमांदगी (पिछड़ेपन) की नहीं है परन्तु हम उनके विषय में जानकारी लेते हैं तो उन में बड़ी संख्या डॉक्टरों इंजीनियरों, व्यापारियों तथा ऊँची सरकारी नौकरियां पाने वालों में ऐसी है जो इस्लामी कर्मों से बहुत दूर हैं, इस्लाम की दृष्टि में ऐसे लोग उन्नति प्राप्त धनवान होते हुए पिछड़े वर्ग के हैं। एवं इनमें ऐसे लोग भी हैं जो फराइज़ व वाजिबात की अदायगी में कोताही नहीं करते इस्लाम की दृष्टि में ऐसे लोग उन्नति प्राप्त लोग हैं।

रहे साधारण मुसलमान जिनकी न सरकारी नौकरी है, न बड़ा हुनर, न भारी खेती, वह मजदूरी मेहनत करके अपना और अपने सम्बन्धियों का खर्च स्वयं चलाते हैं भूखे नहीं रहते, उनके विषय में इस्लामी दृष्टि से देखा जाये तो निकलेगा कि उनको निर्धन नहीं कहा जा सकता, इस्लाम में साहबे निसाब को धनवान कहा गया है अर्थात जिसके पास साढ़े बावन

तोला (लगभग 612 ग्राम) चाँदी है वह मालदार है अब आप पता लगाइये कि कितने मुसलमान ऐसे हैं जिनके पास 612 ग्राम चाँदी नहीं है या 612 ग्राम चाँदी खरीदने भर के पैसे उनके पास नहीं हैं। आप जाइज़ा लेंगे तो 90 प्रतिशत लोग 612 ग्राम चाँदी के मालिक मिलेंगे, यह सब इस्लामी दृष्टिकोण से धनवान हैं पिछड़े नहीं हैं चाहे समाज के मुकाबले में पिछड़े हों।

अब इस वर्ग का हम जाइजा लेते हैं तो अधिकांश लोग नमाज नहीं पढ़ते रमज़ान के रोज़े नहीं रखते, माल की ज़कात नही निकालते, शरीअत को पीठ पीछे डाले हुए हैं, यद्यपि वह एक दृष्टि से धनवान हैं कि साहिबे निसाब हैं परन्तु इस्लाम को छोड़ कर वह इस्लामी मापदण्ड में पसमांदा (पिछड़े हुए) हैं। मुसलमानों की एक संख्या ऐसी भी है जो इतना धन भी नहीं रखते कि 612 ग्राम चाँदी खरीद सकें न उनके पास 612 ग्राम चाँदी है ऐसे लोग निर्धन कहे जाएंगे उनमें दो प्रकार के लोग हैं–

कुछ तो वह हैं जो इस्लामी कर्मों को अपनाए हुए हैं, नमाज़ के पाबन्द हैं, रमज़ान के रोजे रखते हैं मर्द दाढ़ी रखते हैं और औरतें पर्दा करती हैं, वह अपने सारे काम करती हैं, अपने हुनर से हलाल रोज़ी भी कमाती हैं जैसे सिलाई, कढ़ाई करके या बच्चियों को शिक्षा देकर या और दूसरे व्यवसाय से परन्तु सब शरई तौर पर, यह लोग तमाम बुरे कामों से बचते हैं नाच गाना, सनीमा से दूर रहते हैं, मेहनत मजदूरी करके रोज़ी कमाते हैं हलाल खाते हैं हराम से बचते हैं किसी को कष्ट नहीं देते आतंकवाद के निकट नहीं जाते हैं, यह लोग निर्धन अवश्य हैं परन्तु इनको पसमांदा कहना उनका अपमान करना है, ऐसे लोग अपने धनवान दीनदार भाइयों की मदद के भागी अवश्य हैं परन्तु वह इस्लाम की दृष्टि में आदरणीय हैं, सम्मान योग्य हैं, अल्लाह के प्रिय हैं उनको परितुष्टि तथा सन्तोष का अपार धन प्राप्त है।

इन निर्धनों में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो मुसलमान तो कहलाते हैं परन्तु इस्लाम की कोई पहचान सिवाये खत्ना कराने या भैंस का गोश्त खाने के और कुछ भी नहीं है निः संदेह ऐसे लोग पसमांदा हैं, पिछड़े हैं, काबिले रहम हैं, उनको इस दरिद्रता से उबारना एक कार्य है, सबसे पहले दीनदार मुसलमानों का कर्तव्य है कि उनको इस्लाम सिखाएं सहीह मुसलमान बनाएं फिर उनकी गरीबी की ओर ध्यान दें।

सरकार तथा समाज की दृष्टि में मुसलमानों का पिछड़ापन–

सरकार तथा समाज के पिछड़े पन का मापदण्ड अलग है, उनके निकट यदि किसी विशेष वर्ग के लोग उच्च शिक्षा अथवा साधारण शिक्षा से वंचित हैं, सरकारी नौकरी में उनका कोई स्थान नहीं है, व्यापार में वह पीछे हैं, खेती किसानी में पीछे हैं, राजनीति में उनका कोई भाग नहीं है, उनके पास धन नहीं है, माडर्न वाहन नहीं है, घर पक्का नहीं है आदि तो वह वर्ग पिछड़ा वर्ग है, इस

मापदण्ड से जब मुस्लिम वर्ग की समीक्षा की गई तो वह देश के दलितों से भी पीछे निकले। सरकार को इसकी चिन्ता हुई और उसने देश के दलितों को संभालने की योजनाएं चलाईं, निःसंदेह यह योजनाएं गरीबी दूर करने में कारगर सिद्ध होंगी, और लाखों अपितु करोड़ों लोगों ने इन योजनाओं से लाभ उठाना आरम्भ कर दिया है और आशा है कि इन योजनाओं द्वारा दलितों की दरिद्रता दूर होगी परन्तु बड़े दुख की बात यह है कि यह सभी योजनाएं ब्याज युक्त हैं, और मुसलमान ब्याज लेने को भी अवैद्य मानता है और ब्याज देने को भी। हमारे उलमा को इस ओर ध्यान देना चाहिए और मुसलमानों के लिए कोई राह निकालना चाहिए जिससे मुसलमान अवैद्य ब्याज से बच कर प्रगति कर सकें। पिछड़े लोगों की गरीबी दूर करने की सरकारी योजनाओं में सबसे अच्छी योजना कौशल विकास योजना है इसमें मुस्लिम युवकों को बढ़ चढ़ कर भाग लेना चाहिए, परन्तु इसमें भी किसी हुनर (कला) में प्रशिक्षण लेने के पश्चात उससे सम्बंधित उद्योग लगाने में धन की आवश्यकता होती है और सरकार धन कर्ज़ दिलाने पर तैयार है परन्तु यह कर्ज भी ब्याज रहित न होगा, अलबत्ता जिन उद्योगों में सरकारी अनुदान मिलता है तथा ब्याज के साथ कर्ज़ भी, उसमें इस बात की गुंजाइश समझ में आती है कि अनुदान और ब्याज बराबर हैं या अनुदान अधिक हो तो कर्ज़ ले कर वह उद्योग अपनाया जा सकता है। कुछ उद्योग ऐसे हैं जिनमें खासी ज़मीन की आवश्यकता होती है जैसे मछली पालन, डेरी लगाना, बकरी पालन आदि। परन्तु ज़मीन का प्राप्त करना गरीब मुसलमानों के लिए असम्भव है।

ख़लीजी देश और निर्धन मुसलमान-

निःसंदेह ख़ालीजी देशों ने मुसलमानों की माली दशा सुधारी है, परन्तु ख़लीजी देशों में काम प्राप्त करना, पास्पोर्ट बनवाना तथा वीज़ा प्राप्त करना निर्धन मुसलमानों के बस का नहीं आज लाखों मुसलमान ख़लीजी देशों से पैसा ला रहे हैं वह पसमांदा नहीं हैं। खलीजी देशों में मुसलमान ही नही बल्कि गैर मुस्लिमों की भी लाखों की संख्या वहां से पैसा ला रही है, यह सच है कि जो खाते पीते मुसलमान भी खलीजी देशों से माली एतिबार से सुधर गये हैं अगर वह खलीजी देशों में न जाते तो वह भी दरिद्रता का शिकार हो जाते इस लिए कि अपने देश में उनकी प्रगति की राहें बन्द थी। न उनको सरकारी नौकरियां आसानी से मिल रही थीं न उनका व्यापार में कोई भाग था अल्लाह ने ख़लीजी देशों के द्वारा उनकी इज़्ज़त रख ली और आज वह समाज में एक स्थान रखते हैं।

◆◆

तौबा

शिर्क अथवा कुफ़्र करने वाले अगर तौबा किये बिना मर जाएंगे तो सदैव जहन्नम में जलेंगे। अतः शिर्क या कुफ़्र के गुनाह पर तुरन्त तौबा करें और प्रति दिन अल्लाह तआला से अपने तमाम गुनाहों (पापों) की क्षमा मांगते रहा करें।

दीने इस्लाम का मिज़ाज और उसकी नुमायां ख़ुसूसियात

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0

—अनु0 मु0 हसन अंसारी

दूसरी बात यह है कि नबियों की दावत व तबलीग़ और जिद्दोजहद का असल सबब महज़ ख़ुदा की रज़ा (मर्ज़ी) और खुशनूदी की तलब होती है। यह एक ऐसी तेज़ तलवार है जो इस मक़सद के अलावा हर मक़सद को काटती है फिर दुन्या की कोई तलब बाक़ी नहीं रहती। न मुल्क व दौलत न सल्तनत व रियासत न इज़्ज़त की तमन्ना न इक़तेदार की हवस।

यह हक़ीक़त सबसे जियादा अल्लाह के रसूल सल्ल0 की उस दुआ में झलकती है जो आपने तायफ़ में उस वक़्त की थी जब तायफ़ वालों ने आप के साथ वहशियाना बर्ताव किया था जिसकी मिसाल दावत व रिसालत की तारीख़ में मिलनी मुश्किल है। आप जिस मक़सद के लिए वहां गये थे वह पूरा नहीं हुआ। तायफ़ का एक भी आदमी मुसलमान नहीं हुआ। मगर इस नाज़ुक घड़ी में आपने जो दुआ की उसके कल्मात यह थेः—

"इलाही अपनी कमज़ोरी बेसरोसामानी और लोगों में तहक़ीर की बाबत तेरे सामने फ़रियाद करता हूँ। तू सब रहम करने वालों से जियादा रहम करने वाला है, दरमान्दा और आजिज़ों का मालिक तू ही है, और मेरा मालिक भी तू ही है, मुझे किसके सुपुर्द कर रहे हैं, क्या बेगाना तुर्शरु के, या उस दुश्मन के जो काम पर क़ाबू रखता है।"

इस नुक़्ते पर आकर नबूवत का मिजाज़ पूरी तरह झलक उठता है आप फ़रमाते हैंः—

"अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं तो मुझे भी इसकी परवाह नहीं, लेकिन तेरी आफ़ियत मेरे लिए जियादा फैलाव वाली है।"

नूह अलै0 जिन्होंने दावत व तबलीग़ का काम एक लम्बी मुद्दत तक किया, के बारे में कुर्आन की शहादत हैः—

तर्जुमा *"वह अपनी क़ौम में पचास साल कम हज़ार साल रहे। (सूरः अन्कबूत—14)*

"नूह अलै0 ने खुदा से अर्ज़ किया कि परवरदिगार मैं अपनी क़ौम को रात—दिन बुलाता रहा.....फिर मैं उनको खुले तौर पर भी बुलाता रहा, और ज़ाहिर व पोशीदा हर तरह समझाता रहा।" (सूरः नूह—5,8,9)

लेकिन इस मेहनत का नतीजा क्या रहा?

"उनके साथ ईमान बहुत ही कम लोग लाये।"

(सूरः हूद—40)

मगर हज़रत नूह अलै0 इस पर मायूस नहीं हुए और अपनी मेहनत को बेकार नहीं समझा और न इससे उनके खुदा के महबूब पैग़म्बर होने मे कोई फ़र्क़ आता है। खुदा उनसे राज़ी था और वह अपने ख़ुदा से राज़ी थे। खुदा का पैग़ाम उन्होंने खुदा के बन्दों तक पहुंचा दिया था जिसके इनाम में कुर्आन की यह आयतें नाज़िल हुई।

तर्जुमाः *"और पीछे आने वालों में उनका ज़िक्र बाक़ी छोड़ दिया यानी तमाम जहान में नूह अलै0 पर सलाम हो। नेकूकारों को हम ऐसे ही बदला दिया करते हैं, बेशक वह हमारे*

मोमिन बन्दों में से थे"। (सूरः साफ़फ़ात 78–81)

कुर्आन करीम दावत व तबलीग़ के मैदान में काम करने वालों को तालीम देता है किः–

तर्जुमाः *"वह जो आख़िरत का घर है, हमने उसे उन लोगों के लिए तैयार कर रखा है, जो मुल्क में जुल्म और फ़साद का इरादा नहीं करते और अन्जामे नेक परहेज़गारों ही का है।"*

(सूरः क़सस)

इसका मतलब नहीं है कि दावत तबलीग़ के काम में ईमान की इस्लामी ताक़त की अहमियत कम की जाये। यह ख़्याल ग़ैर इस्लामी है और इसमें रहबानियत की झलक मिलती है जिसके लिए इस्लाम में कोई जगह नहीं। अल्लाह तआला का इरशाद है:–

तर्जुमाः *"जो लाग तुम में से ईमान लाये, और नेक काम करते रहे, उनसे खुदा का वायदा है कि उनको मुल्क का हाकिम बना देगा, जैसा कि उनसे पहले लोगों को हाकिम बनाया था, और उनके दीन को जिसे उसने उनके लिए पसन्द किया है, मज़बूत और पायदार करेगा और ख़ौफ़ के बाद उनको अमन बख़्शेगा, वह मेरी इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी को शरीक न बनायेंगे और जो इसके बाद कुफ़्र करे तो ऐसे लोग बदकिरदार हैं।"*

(सूरः अन्फ़ाल–39)

यह भी इरशाद है:–

तर्जुमाः *"यह वह लोग हैं कि अगर हम इनको मुल्क में दस्तरस दें तो नमाज़ को क़ायम करें, और ज़कात अदा करें, और नेक काम करने का हुक्म दें, और बुरे कामों से मना करें, और जब कामों का अन्जाम खुदा ही के अख़्तियार में है।"*

(सूरः हज–41)

अल्लाह तआला ने मोमिन के लिए इज़्ज़त सरबुलन्दी का वायदा फ़रमाया है लेकिन इस शर्त पर कि उनमें ईमान हो और उनके अमल का मक़सद सिर्फ़ खुदा की रज़ा हासिल करना हो इज़्ज़त व इक़्तेदार हासिल करना नहीं। क्योंकि इज़्ज़त व इक़्देतार नतीजा है नं कि मक़सद, इनाम है न कि ग़र्ज़ व ग़ायत। अल्लाह तआला का इरशाद है:–

तर्जुमा *"और (देखो) बेदिल न होना, और न किसी तरह का ग़म करना, अगर तुम मोमिन हो तो तुम्हीं ग़ालिब रहोगे।"*

(सूरः आल–ए– इमरान–139)

तर्जुमा *"जिस दिन न माल ही कुछ फ़ायदा दे सकेगा न औलाद, हां जो शख़्स खुदा के पास पाक दिल लेकर आया (वह बच जायेगा)।"*

(सूरः शोरा 88–89)

"अल्लाह तआला हज़रत इब्राहीम अलै0 की तारीफ़ करते हुए फ़रमाता है (जब वह अपने रब के पास ऐब से पाक दिल लेकर आये)।"

सूरः सफ़फ़ात–84)

इसलिए हर उस चीज़ से जो क़ल्बे सलीम के मनाफ़ी हो और जिसके सनम बन जाने का ख़तरा हो उससे चौकन्ना रहने की ज़रूरत है और हर क़ीमत पर बचना लाज़मी है। अल्लाह तआला का इरशाद है:–

तर्जुमा *"क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को माबूद बना रखा।"*

(सूरः अल–फ़ुरक़ान–43)

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमायाः–

शेष पृष्ठ .....17...पर...

ज्ञान तथा कला में मुसलमानों की श्रेष्ठता तथा पाश्चातय विचारधारा पर उनका प्रभाव

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद रावे हसनी नदवी

जिन महत्वपूर्ण तथा आधारभूत मैदानों में इस्लामी सभ्यता तथा संस्कृति के अनमिट प्रभाव पड़े वह इस्लामी विश्वास तथा इस्लाम धर्म है। यह वास्तविकता है कि सातवीं शताब्दी ईस्वी से लेकर यूरोप जागरण काल तक यूरोप में धार्मिक संशोधन के नाम पर जो आन्दोलन उठे उनमें इस्लामी सभ्यता का बड़ा गहरा प्रभाव है इस लिए कि सर्वप्रथम इस्लाम ही ने भर पूर शक्ति के साथ घोषित किया कि अल्लाह एक है, केवल वही सर्व शक्तिमान है, उसी को अधिकार तथा उसी की सत्ता है, वह शरीर तथा आकार और हर प्रकार के विचार से स्वच्छ तथा निर्दोष है, इसी प्रकार इस्लाम ने यह भी घोषित किया कि मनुष्य अल्लाह ही की उपासना करे अल्लाह से सम्बन्ध जोड़ने में विद्वानों तथा महापुरुषों, पोपो, पादरियों और प्रोहितों को साधन बनाने की आवश्यकता नहीं वह बिना मध्यस्थ सीधे अपने पालनहार को पुकारें, और सीधे उसी से दुआ मांगें, अल्लाह को हर व्यक्ति के लिए हाजिर व नाज़िर समझें, उसे सर्व व्यापी, सर्व दर्शी मानें, वह सब की पुकारों तथा दुआओं को सुनता तथा उनको स्वीकृत प्रदान करता है किसी बिचौलिये की आवश्यकता नहीं होती। यह वह बातें हैं जो दूसरी कौमें के मस्तिष्क को खोलने तथा शुद्ध बातों को अपनाने का कारण बनी इसलिए कि उस समय दूसरी कौमें अपने धर्म की कठोरता की हथकड़ियों में जकड़ी हुईं थीं, उनको सिकी प्रकार के सोच की स्वतंत्रता प्राप्त न थी, उनमें विचार तथा कल्पनाएं धन तथा शरीर पर अपितु यह कि हर वस्तु पर धार्मिक नेताओं का अधिकार था या वह उनके साथ जो चाहते वह व्यवहार कर सकते थे। उस परिस्थिति में जब की पश्चिम तथा पूरब में इस्लामी विजयों का सिलसिला चल पड़ा था, और बहुत से देश उसके अधिकार में आ चुके थे, यह प्राकृतिक बात थी कि पड़ोस की क़ौमें सबसे पहले इस्लामी विश्वास, इस्लामी मौलिक बातों तथा इस्लामी नियमों से परिचित हों, अतएव ऐसा ही हुआ। और सातवीं शताब्दी ईस्वी में पाश्चात्य देशों में ऐसे लोग पैदा हुए जो चित्र की पूजा को नकारने लगे, और उस में कुछ ऐसे लोग भी उठ खड़े हुए जो अल्लाह और बन्दों के बीच मध्यस्थ को नकारने और किताबों के समझने में धार्मिक नेताओं के प्रभाव तथा निर्देशन से स्वतंत्र हो कर खुद से समझने का आवाहन करने लगे, पक्षपाती अनुसंधान कर्ता लिखते हैं कि मारशव लोथर अपनी धार्मिक सुधार आन्दोलन चलाने में अरब दार्शिनकों और मुस्लिम उलमा से प्रभावित था, इसलिए कि उसने अक़ीदा और वह्य (धर्म विश्वास तथा अल्लाह के संदेश उतरने) के सिलसिले में इस्लामी उलमा के विचार पढ़ लिये थे।

उसके काल में यूरोप की शैक्षिक संस्थाएं मुस्लिम दार्शनिकों की पुस्तकों का खसरा लेती थीं जो पहले ही लातीनी भाषा में परिवर्तित हो चुकी थीं, दीन व सलतनत (धर्म तथा शासन) के बीच अलगाव का आन्दोलन जिस क्रान्ति का फ्रांस में ढिन्ढोरा पीटा गया वह उन कठोर हिंसक विचारों का परिणाम था जो तीन अपितु उनसे अधिक शताब्दियों तक यूरोप पर छाया रहा, हमारी इस्लामी सभ्यता का बहुत बड़ा उपकार है कि उसने सलीबी जंगों के मार्ग से और उन्दुलस के मार्ग से यूरोप के मस्तिष्क की छुपी चिंगारी को भड़काया और यूरोप वालों की बुद्धि सुधारी। दूसरा मैदान जिसमें इस्लामी सभ्यता का प्रभाव स्पष्ट रूप में प्रकट हुआ वह ज्ञान तथा दर्शन का मैदान है चिकित्सा शास्त्र, गणित विद्या, रसायन ज्ञान, भूगोल और अन्तरिक्ष ज्ञान पर उसने जो प्रभाव डाला वह भुलाने योग्य नहीं, हमारे उलमा और फलास्फर ही की आवाज़ पर यूरोप अचेतना की निद्रा से जागा, वह इश्बीलिया, कुर्तबा, और ग़रनाता आदि की मस्जिदों से इन विज्ञानों की शिक्षा देते थे, यूरोप के प्रारंभिक विद्यार्थी जो हमारे मदरसे की ओर आते थे बड़ी लगन तथा रुचि के साथ स्वतंत्र वातावरण में यह विज्ञान प्राप्त करते थे। इसकी अपने देश में कोई उपमा नहीं पाते थे।

उस समय जब हमारे उलमा (विद्वान) अपने वैज्ञानिक छात्रों और अपनी पुस्तकों में ज़मीन की कुरवी (अण्डाकार) शक्ल पर उसकी घूमने तथा दूसरे आकाशीय नक्षत्रों के गतिशील होने से सम्बन्धित बातों का उल्लेख करते थे तो यूरोप वालों के मस्तिष्क उन वक्ताओं के विषय में अन्धविश्वास में पड़े हुए थे, यहीं से पश्चिमी लोगों में उन पुस्तकों की अरबी से लातीनी भाषा में अनुवाद करने की रुचि पैदा हुई और हमारे उलमा की पुस्तकें पश्चिम की शैक्षित संस्थाओं में पढ़ाई जाने लगीं, बारहवीं शताब्दी ईस्वी में इब्ने सीना की चिकित्सा शास्त्र की प्रसिध पुस्तक 'अल क़ानून' का अनुवाद किया गया, इसी प्रकार तेरहवीं शताब्दी ईस्वी के अन्त में "राज़ी" की "अलहादी" का भी लातीनी भाषा में अनुवाद हुआ, यह पुस्तक अलक़ानून के मुकाबले में बहुत विस्तृत तथा भारी है, यह दोनों पुस्तकें सोलहवीं शताब्दी ईस्वी तक पूरे यूरोप की संस्थाओं में चिकित्सा की शिक्षा का आधार बनी रहीं जहां तक दर्शन की पुस्तकों का सम्बन्ध है तो वह उनसे अधिक वहां प्रचलित हुईं, अपितु पश्चिम के लोग यूनानी दर्शन से परिचित हमारी ही पुस्तकों के अनुवाद द्वारा हुए यहां से न्यायहित पश्चिमी बुद्धि से स्वीकार करते हैं कि अरब विद्वान मध्य काल में कम से कम 600 वर्षों तक यूरोप के गुरु बने रहे।

प्रसिद्ध पश्चिमी विद्वान गे़एस्ताक़ लोबून ने लिखा है कि अरबों की पुस्तकों के अनुवाद विशेष कर वैज्ञानिक पुस्तकें 5, 6 शताब्दियों तक यूरोप की शैक्षिक संस्थाओं में शिक्षा का उदगम बनी रहीं, हम कह सकते हैं कि चिकित्सा शास्त्र आदि में अरबों का प्रभाव आज तक हमारे इस काल में भी पाया जाता है।

❖❖❖

क़ौम में उलमा का स्थान तथा साधारण मुसलमानों में उनके प्रभाव रहित होने के कारण

(हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0 के एक भाषण से ग्रहीत)

वार्ता का क्षेत्र बहुत विस्तृत है, यदि हम इस्लामी जगत के समस्त वर्गों तथा श्रेणियों की कर्तव्य प्रायणता में शिथिलता तथा उनकी संकीर्णता की समीक्षा करें तो किसी लाभप्रद परिणाम की आशा नहीं अतः मेरा संबोधन इस समय केवल इस्लाम धर्म के आदरणीय उलमा से है कि उनके सुधार तथा उनकी शुद्धता ही पर जन साधारण का सुधार तथा उनकी शुद्धता आधारित है। उलमा यदि सत्य मार्ग पर होंगे शुद्ध पथ पर होंगे तो जन साधारण भी उनके अनुकरण तथा उनके प्रभाव से सत्य मार्ग पर होंगे, परन्तु यदि उलमा में इस्लामी आचरणों से विमुखता होगी विश्वास में दुर्बलता होगी, यदि उनमें भौतिक इच्छाओं के समक्ष झुकाव तथा इस्लाम विरोधी परिस्थितियों से लड़ने के स्थान पर उनको अपना लेने की प्रवृत्ति होगी उनके जीवन का स्तर उच्च होगा, उनमें सादगी तथा कनाअत (उचित प्रयास के पश्चात जो प्राप्त हो उस पर परितुष्टि) लुप्त होगी, वह उच्च खान पान, तथा आनन्दित जीवन के प्रेमी होंगे, तो उसका प्रभाव साधारण मुसलमानों पर अवश्य पड़ेगा।

पहले इस्लामी समाज उलमा का सम्मान करता था और उनको बड़े आदर तथा महानता की दृष्टि से देखता था, उलमा भी जुहद (अनावश्यक इच्छाओं के त्याग) तथा क़नाअत के गुणों से सुसज्जित होते थे उनमें लोगों के धन, सम्पत्ति का लालच न था न वह उससे प्रभावित होते थे, उनका नैतिक स्तर उच्चतर था राजे महाराजे तथा सत्ता वाले भी उनसे डरते थे, और उनका सम्मान करते थे तथा उनको अपने से उच्चतर समझते थे।

परन्तु आज उलमा की यह दशा है कि वह आनन्दित ज़ीवन बिताने में व्यस्त हैं अब उनके तथा साधारण लोगों के जीवन में कोई अंतर नहीं रह गया है, अतः समाज भी उनको उसी स्तर से देखने लगा जिस स्तर तथा दृष्टि से वह जनसाधारण को देखते हैं, और अब उलमा के उपदेशों तथा किसी विकार पर कुछ कहने का सम्मान नहीं रहता, उपदेश तथा धर्म प्रसारण के लिए यह बात अत्यावश्यक है कि उलमा अपनी खोई हुई महानता को पुनः प्राप्त करें अपने को विश्वसनीय बनाएं तथा अपनी दीनी सेवा को जाग्रत क़रके उसे मूल्यवान बनाएं सुधार तथा नवीनीकरण के इतिहास में हमने देखा है कि जब भी इस्लाम और मुसलमान किसी बड़ी समस्या में पड़े हैं और हर ओर निराशा के बादंल छाए हैं तो कोई बड़ा महापुरुष उठा और सुधार तथा प्रयास के मैदान में आया, परिस्थितियों को चैलेंज किया और समय की कुरीतियों की धारा को मोड़ दिया, इस्लामिक विश्वास

तथा इस्लामी शरीअत (इस्लामिक विधान) को भी सुरक्षा प्रदान की तथा क़ौम के मृतक शरीर में एक नवीन आत्मा डाल दी, और कौम को नवजीवन प्रदान किया यह प्रक्रिया हम इतिहास के पन्नों पर बार बार पढ़ते आ रहे हैं, इमाम हसन बसरी रह0 से शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रह0 तक और शैख़ इब्ने तैमिया हर्रानी रह0 अहमद सर हिन्दी रह0 और इस बीसवीं शताबदी के उलमाए रब्बानीयीन और आइम्मा–ए–मुस्लिहीन (कौम सुधारक विद्वानों) तक हर काल तथा हर शताब्दी में यह होता आया है और क़ियामत तक इस्लाम धर्म के प्रसारण तथा सुधार का काम जारी रहेगा और जारी रहना चाहिए।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

आएंगे अधेड़ उम्र को प्राप्त करेंगे, इस आयु में बात करने का उल्लेख इस वास्तविकता को बयान करने के लिए किया जा रहा है, गोद में बात करने की क्षमता अल्लाह ने उनको इसलिए दी थी ताकि हज़रत मरियम की पाक दामनी स्पष्ट हो जाए। 5. उस ज़माने में वेद्यों और हकीमों का ज़ोर था इसी लिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को वह मुअ़ज़िज़ा दिया गया जो इस कला के विशेषज्ञों पर उनकी श्रेष्टता सिद्ध करे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में भाषा व व्याख्यान की बड़ी चर्चा व मांग थी इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को विशेष रूप से कुर्आन पाक का अमर मुअज्ज़िाह दिया गया।

6. बनी इस्राईल के लिए मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत (धर्मशास्त्र) में ऊँट का गोश्त, चरबी और कुछ पक्षी और मच्छलियों की कुछ प्रकार हराम थीं, हज़रत ईसा की शरीअत में उनको जायज़ करार दिया गया।

7. मशहूर है कि पहले दो व्यक्ति हज़रत ईसा के अनुयायी हुए वे धोबी थे कपड़े साफ़ करने की वजह से हवारी (धोबी) कहलाते थे, हज़रत ईसा ने कहा कि तुम कपड़े क्या धोते हो आओ मैं तुम्हें दिल धोना सिखा दूँ वे साथ हो गए, उनके बाद से उनके सब मानने वाले साथियों की उपाधि हवारी पड़ गई।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्यारे नबी की प्यारी.....

अपना वचन सच कर दिखाया तो जन्नत में दाखिल होगा।

(सही मुस्लिम)

अल्लाह से उम्मीद है कि जो भी व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रोकी हुई बातों से रुकेगा और आपकी शिक्षा के अनुकूल हलाल खाएगा और वैद्य अपनाएगा तथा इस हदीस की शिक्षाएं अपनाएगा अल्लाह उससे प्रसन्न होंगे और उसको जन्नत का पुरस्कार प्रदान करेंगे।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

बुख़्ल (कंजूसी), हसद (ईर्ष्या), एवं नशा

—हाशमा अंसारी

बुख़्ल– बहुत से हक जिनका अदा करना फर्ज़ और वाजिब है। जैसे ज़कात, कुर्बानी, किसी मोहताज़ की मदद करना, अपने गरीब रिश्तेदारों के साथ हुस्न सुलूक करना। कंजूसी में यह हक अदा नहीं होता उसका गुनाह होता है यह तो दीन का नुकसान है और कंजूस आंदमी सब की नज़रों में जलील रहता है यह दुन्या का नुकसान है। बुख़्ल आदमी की ज़ात तक महदूद नहीं रहता और सिर्फ इतनी ही बात नहीं होती की वह कंजूस है, माल खर्च करना नहीं जानता, अगर सिर्फ इतनी ही बात होती तो कोई ऐसी बात नहीं थी लेकिन जिस के अन्दर बुख्ल होता है वह माल का लालची भी होता है और हर वक्त उसी धुन में लगा रहता है कि कब किस तरीके से कोई फंसे और माल हमारे कब्जे में आऐ वह हराम व हलाल की भी परवाह नहीं करता, वह यह भी नहीं देखता कि किस का हक मारा जा रहा है। किस पर जुल्म हो रहा है, उसको तो बस अपनी जेब भरने से मतलब रहता है। कंजूस आदमी में हमदर्दी रहम दिली नहीं होती, खौफे खुदा और हर चीज से आजाद होता है, कंजूस आदमी कि कबाहत उस की ज़ात तक महदूद नहीं होती बल्कि दूसरों तक भी उसके असरात पहुंचते हैं। अल्लाह तआला हमारी हिफाज़त फरमाये।

हसद– किसी को खाता पीता, फलता–फूलता इज्जत व आबरू से रहता हुआ देख दिल में जलना और रंज करना ही हसद है यह बुरी बात है इसमें गुनाह भी है ऐसे शख़्स की सारी ज़िन्दगी तल्खी में गुज़रती है। अर्थात उसकी दुन्या और दीन दोनों में ही असर पड़ता है।

अतः इन्सान को हसद करने से पहले सोचना चाहिए कि हसद करने से मेरा ही नुकसान है, और वह मेरा नुकसान यह है कि मेरी नेकियां बर्बाद हो रही हैं। क्यों कि हदीस शरीफ में है हसद नेकियों को इस तरह खा जाती है जिस तर आग लकड़ियों को खा जाती है। और वजह उसकी यह है कि हसद करने वाले गोया अल्लाह पर एतिराज कर रहे हैं कि फुलां शख्स इस नेमत का हकदार नहीं था उसे यह नेमत क्यों दी। तो यूं समझें कि तौबा–तौबा अल्लाह तआला का मुकाबला करते हो तो कितना बड़ा गुनाह होगा। और तकलीफ जाहरी की वजह से हमेशा रंज व गम में रहेगा और जिस पर हसद किया है उसका कोई नुकसान नहीं क्योंकि हसद से वह नेमत जाती न रहेगी बल्कि उसका नफा है कि उस हसद करने वाले कि नेकियां उसके पास चली जाती हैं। जब ऐसी बात सोचो तो फिर अपने दिल को जब्र (जो कुछ करता है अल्लाह करता है) करके जिस शख्स पर हसद पैदा हुआ है

शेष पृष्ठ .....17...पर...

मोमिन के दस गुण

—रुक़य्या अ़ब्दुल गफ़्फार

सूरतुल फ़ुरकान की अन्त की कुछ आयतों में अल्लाह तआला ने अपने उन मुख्य बन्दों का उल्लेख किया है ऐसे बन्दे जो रिसालत और आखिरत (अगले जीवन) पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, और उनके आचरण सब के सब अल्लाह और उसके रसूल की शिक्षा के अनुकूल और उसकी मर्जी के मुंताबिक़ होते हैं, कुर्आने करीम में ऐसे बन्दों को इबादुर्रहमान कहा गया है, और उन के कुछ गुण बयान किये गये हैं।

1. पहला गुण यह है कि वह अपने इरादे और इच्छाओं में अल्लाह की मर्जी के अन्तर्गत हों और अल्लाह के बताए हुए आदेशों के अनुकूल जीवन बिताएं।

2. दूसरा गुण यह है कि जब वह ज़मीन पर चलते हैं तो न अकड़ कर चलते हैं कि उससे घमण्ड प्रकट होता हो। और न बहुत धीरे चलते हैं कि रोगी मालूम हों अपितु बीच की चाल चलते हैं हज़रत फारूक़े आजम ने एक शख्स को रास्ते में बहुत धीरे चलते देखा तो आप ने उससे पूछा, क्या तुम बीमार हो? उसने उत्तर दिया नहीं, तो आपने कहा बलपूर्वक चला करो, हदीस शरीफ़ में आता है कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रास्ते में चलते थे तो देखने वालों को ऐसा लगता था कि आप ढाल से उतर रहे हों।

3. तीसरा गुण यह है कि जब जाहिल (मूर्ख) उनको अपनी ओर सम्बोधित करते हैं तो वह उन मूर्खों को सलाम करके आगे बढ़ जाते हैं, वह यह सोचते हैं कि कहीं यह मूर्ख इस्लाम के विरोध में कोई बात न कह दें या इन से लड़ाई न हो जाए, अगर वह मूर्ख उनके साथ बदले का व्यवहार करते हैं तो वह उनको क्षमा कर देते हैं।

4. चौथा गुण यह है कि वह रातों में अल्लाह के लिए खड़े होते तथा नत मस्तक होते हैं, रात का समय सोने और आराम करने का होता है, फिर भी वह रातों में उपासनाओं में व्यस्त रहते हैं।

5. पांचवां गुण यह है कि इन उपासनाओं के होते हुए वह व्याकुल रहते हैं वह निर्भय हो कर नहीं रहते हैं अपितु उनको हर समय अगले जीवन की चिन्ता रहती है।

6. छठा गुण यह है कि जब वह माल खर्च करते हैं तो उसमें बीच की राह अपनाते हैं, न इतना अधिक खर्च करते हैं कि वह स्वयं निर्धन हो जाएं न बखील बन जाते हैं अर्थात अल्लाह ने जिन रास्तों में खर्च करने का आदेश दिया है उन रास्तों में खर्च करते हैं, अवैद्य तथा बेजा खर्च नहीं करते हैं, हदीस शरीफ में आता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 कहते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया कि जिसने खर्च करने में बीच की राह अपनाई वह कभी गरीब न होगा।

7. सातवां गुण यह है कि वह अल्लाह का साझी

नहीं ठहराते अर्थात शिर्क नहीं करते चाहे छुपा हुआ हल्का शिर्क हो अथवा प्रत्यक्ष शिर्क हो, वह केवल अल्लाह की उपासना करते हैं।

8. आठवां गुण यह है कि वह किसी का अकारण वध नहीं करते अर्थात वह केवल कत्ल के बदले में ही क़त्ल करते हैं, तथा कभी वह कातिल को क्षमा भी कर देते हैं।

9. नवां गुण यह है कि वह व्यभिचार नहीं करते हैं दुश्कर्म से दूर रहते हैं। गन्दे कामों तथा अश्लीलता के कर्मों से बचते हैं।

10. दस्वां गुण यह है कि वह झूठी गवाही नहीं देते हैं, दूसरा मतलब यह है कि वह झूठों में शामिल नहीं होते और उनके बीच से गुज़र भी हो तो तेज़ी से गुज़र जाते हैं।

यह वह दस गुण हैं जो अल्लाह के आदेशों के अनुकूल एक मोमिन में होने चाहिए, इन गुणों के अपनाए बिना कोई व्यक्ति वास्तविक मोमिन नहीं हो सकता।

❖❖❖

दीने इस्लाम का .....

"शैतान इब्ने आदम (की रगों) में ख़ून की तरह दौड़ जाता है।"

दीन इस्लाम की तीसरी ख़ुसूसियत यह है कि नबी जो अक़ीदा व शरीअत लेकर आते हैं। उसमें कोई तरमीम गवारा नहीं करते। उनके यहां तबदीली की गुंजाइश नहीं होती। अल्लाह तआला अपने आखिरी पैग़म्बर को मुख़ातिब करके फ़रमाता है:—

तर्जुमा *" पस जो हुक्म तुम को खुदा की तरफ़ से मिला है, वह सुना दो और मुशरिकों का ज़रा ख़्याल न करो।"*

(सूरः अलहज्र—94)

ऐ पैग़म्बर! जो इरशादात तुम पर .खुदा की तरफ़ से नाज़िल हुए हैं। सब लोगों को पहुंचा दो और अगर ऐसा न किया तो तुम खुदा का पैग़ाम पहुंचाने में क़ासिर रहे, और खुदा तुम को लोगों से बचाये रखेगा। (सूरः मायदा—67)

तर्जुमा *" यह लोग चाहते हैं कि तुम नरमी अख़्तियार करो तो यह भी नर्म हो जायें।"*

(सूरः अलक़लम—9)

❖❖❖

बुख़्ल, कंजूसी .....

जुबान से दूसरे के रूबरू उसकी तारीफ और भलाई करो और यूँ कहो कि अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसके पास ऐसी—ऐसी नेमतें हैं अल्लाह तआला उसको और जियादा दें। और अगर उस शख्स से मिलना हो जाए तो अजिजी (विनम्रता) से पेश आए, पहले—पहले ऐसे बातों से नफ्स को तकलीफ होगी मगर धीरे—धीरे आसानी हो जायेगी और हसद जाता रहेगा।

नशा— जितनी शराबें हैं सब हराम हैं। ताड़ी का भी यही हुक्म है उनका खाना पीना दुरूस्त नहीं बल्कि जिस दवा में ऐसी चीजें पड़ी हों उसका लगाना भी दुरुस्त नहीं। शराब के अलावा जितने नशे हैं जैसे अफीम, जायफल, जाफरान, आदि दवा के लिए इतनी मात्रा खा लेना ठीक है। ◆◇◆

स्वयं भले काम करो, दूसरों को भले काम करने की दावत दो, खुद बुराइयों से बचो, दूसरों को बुराइयों से बचने की शिक्षा दो, इस प्रकार समाज को स्वच्छ बनाओ।

अपना काम खुद करना चाहिए

—मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

एक आदमी सर पर लकड़ियों का गट्ठर लिए चला जा रहा था। आश्चर्य ये कि समस्त अरब ये जानता था कि इस आदमी के पास सैकड़ों गुलाम हैं, रूपये पैसे की रेल–पेल है, लम्बा–चौड़ा कारोबार है। फिर भी उसे सामान ढोने की क्या आवश्यकता?

इस्लाम में अपना काम स्वयं करने पर खूब उभारा गया है। हमारे रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो सारे जहां के सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम व्यक्ति थे, वह भी अपना काम स्वयं करते थे। अपने फटे कपड़े सीते, जूते फट जाने पर उसे दुरुस्त करते, बकरी का दूध दूहते आदि।

हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर पर होते तो किसी नौकर को आटा गूंधते देखते तो उसके साथ बैठ जाते और उसके साथ आटा गूंधने लग जाते।

खैर! बात उन साहब की हो रही थी जिन्होंने सर पर गट्ठर लाद रखा था। जो साहब सर पर गट्ठर लादे हुए थे वह उस समय विश्व के सबसे बड़े शासक थे। क्षेत्रफल की दृष्टि से वह सबसे बड़े साम्राज्य के हाकिम तो थे ही साथ ही वह तमाम मुसलमानों में सबसे धनी व्यकित भी थे। लोगों ने इस हालत में देखा तो सलाम अर्ज किया और बोले, अरे अमीरुल मोमिनीन! आपने सर पर भारी गट्ठर क्यों धर रखा है? अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ि0 ने जवाब दिया, मेरे प्यारे दोस्तो! अपने दिल को आजमा रहा हूं और देख रहा हूं कि लोगों के सामने अपना काम करने में मुझे झिझक तो महसूस नहीं होती।

हज़रज उस्मान रज़ि0 का अपने मन को भांपने के साथ–साथ मुसलमानों को एक बार फिर ये सबक याद दिलाना मकसूद था कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी अपना हर एक कार्य स्वयं अपने पवित्र हाथों से करते थे।

हज़रत उस्मान रज़ि0 बड़े ही नर्म दिल और शर्म व हया वाले थे। और सबसे बड़ी बात कि वह बड़े ही दानशील थे। इस्लाम के प्रचार–प्रसार और मान–सम्मान हेतु दिल खोल कर खजाना लुटाते थे। हज़रत उस्मान रज़ि0 हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दामाद थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो बेटियों की शादी उनसे हुई थी। एक के निधन के बाद दूसरी बेटी से शादी की। हज़रत उस्मान रज़ि0 अल्लाह से बहुत डरने वाले थे, खास तौर से अज़ाबे कब्र से। जब भी कब्र की चर्चा होती तो इतना रोते की दाढ़ी तर हो जाती ।

हज़रत उस्मान रज़ि0 अपने शासनाधिकारियों को सख़्त ताकीद करते थे कि

जनता के साथ वह दया तथा प्रेम भाव से पेश आएं। अधिकारियों को सदैव चेताया करते कि वह केवल तहसीलदार हो कर न रह जायें बल्कि टैक्स वसूली के साथ–साथ उन्हें आराम भी पहुंचाएं। लगान आदि की वसूली के साथ इस ओर विशेष ध्यान दें कि भूमि सुधार तथा निर्माण कार्य में ढ़िलाई न होने पाये।

उन्होंने यात्रियों के लिए सड़कें, सरायें और कुएं खूब ढेर सारे बनवाए, ताकि उन्हें तनिक भी कष्ट न हो। उनका नियम था कि जुमे की नमाज़ से पहले ऐलान करते कि यदि किसी को कुछ कहना हो अथवा किसी गवर्नर या अधिकारी की शिकायत करनी हो तो बिला झिझक करें। इसी प्रकार प्रत्येक वर्ष हज के समय अधिकारियों को तलब करते और फिर ऐलान करते कि यदि किसी अधिकारी से किसी को कोई शिकायत हो तो निडर हो कर कहे। आप रज़ि0 कहा करते थे कि मैं शक्तिशाली के मुकाबले में निर्बल के साथ हूँ।

आप रज़ि0 लोगों के साथ मिल–जुल कर रहते और बड़ी नर्मी से पेश आते ताकि उन्हें कुछ कहने में परेशानी न हो। दोपहर के समय मस्जिद में ही वास करते। चादर सिर के नीचे रख लेते और फर्श पर लेट जाते। उठते तो जिस्म पर कंकड़ियों के निशान बन जाते। किसी को कुछ कहना–सुनना होता तो मस्जिद में ही अपनी बात रख देता और आप वहीं निर्णय दे देते।

इतिहासकारों ने उनकी दानशीलता पर बहुत कुछ लिखा है उसमें ये भी है कि वह लोगों को अमीरों वाला खाना खिलाते और स्वयं सिरका तथा तेल खाते थे। वस्त्र भी मामूली पहनते थे। पत्नियों को भी उत्तम वस्त्र धारण करने से रोक दिया था।

अल्लाह ऐसे आदर्श शासकों की आदतें और प्रवृत्ति हमारे शासकों में भी डाल दे ताकि एक आदर्श शासन की स्थापना हो।

आमीन

❖❖❖

भारत प्यारा ज़िन्दाबाद

–इदारा

भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद
माता सब की ज़िन्दाबाद
पिता भी सबके ज़िन्दाबाद
भारत शब्द मुज़क्कर है
इसको माता कहें नहीं
भारत प्यारा देश हमारा
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हम हैं केवल रब के पुजारी
रब के पुजारी ज़िन्दाबाद
रब ही को हैं ईश्वर कहते
यह तो हिन्दी भाषा है
उस का साझी नहीं है कोई
ईश पुजारी ज़िन्दाबाद
हम हैं निछावर वतन पे अपने
पर ईमां को बचा कर अपने
वतन हमारा ज़िन्दाबाद
और ईमां पायिन्दा बाद

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः सास अपने दामाद के साथ हज कर सकती है या नहीं? क्या दामाद का रिश्ता महरम का है या गैर महरम का?

उत्तरः सास दामाद के साथ सफरे हज पर जा सकती है, दामाद का रिश्ता महरम का है और यह अबदी (सदैव का) है, महरम से मुराद वह रिश्ते दार हैं जिनके साथ कभी निकाह हलाल न हो, दामाद से भी हमेशा निकाह हराम है, यहां तक कि अगर निकाह के बाद बीवी से कुरबत की नौबत न आई हो और उससे पहले ही तलाक हो जाये तब भी सास और दामाद एक दूसरे पर हमेशा के लिए हराम हैं, कुर्आन मजीद में मुहर्रमात की फेहरिस्त में सास का भी जिक्र है। (सूरतुन्निसाः 23)

प्रश्नः जिस ने खुद हज नहीं किया, उससे हज बदल करवाना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः जिसने खुद अपना हज नहीं किया उससे हज्जे बदल कराना हनफी उलमा के नज़दीक दुरुस्त है लेकिन उसमें थोड़ी तफ़्सील यह है कि अगर खुद उस पर हज फर्ज है तो उससे हज्जे बदल कराना मकरूह तहरीमी है, और अगर फर्ज नहीं है तो मकरूहे तनज़ीही है, इसलिए बेहतर यह है कि हज्जे बदल उस शख्स से कराया जाये जिसने अपना हज अदा कर लिया हो।

(रद्दुल मुहतारः 4/20–21)

प्रश्नः एक शख्स पर हज फर्ज था, लेकिन वह अपनी जिन्दगी में नहीं कर सका और न ही वसीयत कर सका, अगर उनकी औलाद उनकी तरफ से हज करे तो क्या वालिद की तरफ से हज अदा हो जायेगा?

उत्तरः हज फर्ज होने के बावजूद कोई जिन्दगी में हज अदा नहीं कर सका और न वसीयत की और औलाद मय्यित की तरफ से हज करे तो अल्लाह की जात से उम्मीद यही है कि हज अदा हो जायेगा और इन्शाअल्लाह जवाबदेही से बच जायेगा, अल्लामा इब्नि आबदीन शामी ने इमाम अबू हनीफा के हवाले से यही लिखा है। (रद्दुल मुहतारः 4/16)

प्रश्नः क्या औरत मर्द की तरफ से और मर्द औरत की तरफ से हज्जे बदल कर सकते हैं?

उत्तरः मर्द औरत की तरफ से और औरत मर्द की तरफ से हज्जे बदल कर सकते हैं उसमें कोई हर्ज नहीं है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 की एक रिवायत बुखारी में है कि कबीला बनू खसअ़म की एक खातून ने हिज्जतुल वदा के मौके से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया कि मेरे वालिद बहुत जईफ हैं, क्या मैं उनकी तरफ से हज कर सकती हूँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हाँ यह हदीस सराहत के साथ बताती है कि औरत भी मर्द की तरफ से हज्जे बदल कर सकती है।

प्रश्नः हज्जे बदल में क्या हज्जे इफराद या किरान ही ज़रूरी है या तमत्तुअ़ भी

किया जा सकता है, सुना है बाज किताबों में है कि हज्जे बदल में हज्जे तमत्तुअ़ नहीं किया जा सकता है, अस्ल हुक्म क्या है?

उत्तर: बिला शुबह कुतुबे फिक्ह में यही है कि हज्जे बदल में इफराद या किरान किया जायेगा लेकिन मौजूदा हालात में जो दिक्कतें हैं, उनके पेशे नजर फुक़हा के कौल पर हिन्द व पाक के उलमा ने हज्जे बदल में तमत्तुअ़ की इजाज़त पर फतवा दिया है, इस्लामिक फिक़्ह एकेडमी इण्डिया ने भी सेमीनार में इत्तिफाके राय से जवाज ही पर फैसला किया है, लिहाजा हज्जे बदल में हज्जे तमत्तुअ़ किया जा सकता है, अगर हज्जे बदल कराने वाला जिन्दा हो तो उससे इजाज़त ले लेना बेहतर है और कुर्बानी उन्हीं की तरफ .से कर दी जाये। (बहरुर्राइक: 3/116)

प्रश्न: बाज हजरात सफरे हज में अपने छोटे बच्चों को भी ले जाते हैं और उनको एहराम भी पहनाते हैं और माँ–बाप सारे अफआले हज में उनको अपने साथ रखते हैं, सुवाल यह है कि क्या उन बच्चों के अफआले हज अदा हो जायेंगे, जबकि वह मुकल्लफे शरअ़ नहीं होते हैं, क्या यह नफ़्ल हज होगा या फर्ज?

उत्तर: बिला शुब्ह बच्चे शरअ़ के मुकल्लफ नहीं होते लेकिन अगर वालिदैन साथ–साथ बच्चों के भी अफआले हज अदा करते हैं तो बच्चों का यह हज हो जायेगा, और नफ़्ली हज होगा, बाज फुकहा की राय यह है कि बच्चे को हज का सवाब मिलेगा और वालिदैन को तालीम तरबीयत का अज्र मिलेगा, गरज कि दोनों को इसका फाइदा मिलेगा, दो अरकान वकूफे अरफा और वकूफे मुजदल्फा तो खुद बच्चे की तरफ से हो जायेंगे और बकीया वालिद बच्चे की तरफ से नीयत करके अदा करेंगे, अगर एहराम में खिलाफ वर्जी होगी तो वह काबले मुआफी होगी .कोई तावान नहीं देना होगा।

(मराकिल फलाह: 484)

प्रश्न: हमारे पड़ोस में 15 शाबान को अनवाअ़ व अक्साम (विभिन्न प्रकार) के हल्वे बनते हैं वह हमारे घर हल्वों का हदीया भी भेजते हैं हमारे घर 15 शाबान को हल्वा बनाने का मामूल न था हमारे न समझ बच्चे हल्वे के लालच में बार बार पड़ोस के घर जाते थे इसलिए हमारे घर वालों ने फैसला किया कि 15 शाबान से पहले 12, 13 या 14 शाबान को हम भी हल्वा बनवा लिया करें ताकि हमारे बच्चे हल्वे के लालच में पड़ोस के घर दौड़–दौड़ कर न जायें हमारा यह फैसला और अमल कैसा है?

उत्तर: लिखे हुए हालात में आपका फैसला और अमल दुरुस्त है।

प्रश्न: 15 शाबान से मुतअ़ल्लिक हदीस "कूमूलैलहा व सूमू नहारहा" (उस की रात में जागो और उसके दिन में रोजे रखो) किस दर्जे की है और उस पर अमल का क्या हुक्म है?

उत्तर: मजकूरा (उक्त) रिवायत को बाज हज़रात ने मौजूअ़ (गढ़ी हुई) करार दिया है लेकिन हदीस के मारूफ आलिम (प्रसिद्ध विद्वान) मौलाना हबीबुर्रहमान आज़मी रह0 ने इसकी तरदीद (खण्डन) की है उन्होंने इसको ज़ईफ माना है उनका ख़्याल है कि चूंकि यह रिवायत आमाल के फजाइल से तअल्लुक रखती है इसलिए जईफ होते हुए

काबिले क़बूल (स्वीकार के योग्य) है। (मजल्लतुल मआसिर रजब, रमजान 1414)

प्रश्नः कुछ लोग 15 शाबान की रात में बाज बुजुर्गों से मन्सूब एक खास दुआ पढ़ते हैं और दूसरों को भी उसकी तरगीब (प्रलोभन) देते हैं ऐसा करना कैसा है?

उत्तरः अगर यह खास दुआ किताब व सुन्नत से साबित नहीं है तो उस का एहतिमात (प्रबन्ध) करना या दूसरों को तरगीब देना मुनासिब नहीं है।

प्रश्नः कुछ लोग 15 शाबान की रात में यासीन शरीफ इस तौर पर पढ़ते हैं कि हर "मुबीन" पर एक खास नीयत करते हैं इस तरह 15 शाबान की रात में यासीन शरीफ पढ़ने का क्या हुक्म है?

उत्तरः यासीन शरीफ पढ़ने का यह तरीका किताब व सुन्नत और सलफे सालिहीन से मनकूल नहीं है, इसलिए उसे तर्क करना चाहिए और सिर्फ दीगर सूरतों की तरह तिलावत की जानी चाहिए और कोई खास तरीका नहीं इख्तियार करना चाहिए।

प्रश्नः एक शख्स के पास हज के सफर भर का माल है लेकिन उसके पास अपना मकान नहीं है किराये के मकान में रहता है, क्या उस पर हज फर्ज है?

उत्तरः जिसके पास जरूरी खर्चों के अलावा हज करने भर का खर्च मौजूद हो उस पर हज फर्ज हो जायेगा चाहे वह किराये के मकान में रहता हो, हज फर्ज होने के लिए अपना जाती मकान होना जरूरी नहीं है।

(बदाये सनायेः 2/298)

प्रश्नः एक गरीब आदमी को उसके मालदार दोस्त ने हज करा दिया, अब वह ग़रीब आदमी मालदार हो गया क्या वह दोबारा अपना फर्ज हज अदा करे या पहला हज उसके लिए काफी होगा?

उत्तरः ग़रीबी हालत में किया हुआ हज उसके लिए काफी होगा, बदाये सनये में है कि किसी गरीब ने अपनी गरीबी की हालत में किसी तरह हज कर लिया तो अब मालदार हो जाने पर उस पर दोबारा हज फर्ज न होगा।

(बदाये सनायेः 3/45)

"अलबहरुर्राइक" के हाशिए पर भी यह मसअला इसी तरह मौजूद है।

(अलबहरुर्राइकः 2/546)

प्रश्नः जो लोग उमरा करने जाते हैं क्या उन पर हज फर्ज हो जाता है?

उत्तरः जो शख्स हज के ज़माने में या उसके करीब में मक्का मुकर्रमा पहुंच जाता है चाहे वह अपनी तरफ से उमरा करने गया हो चाहे वालिदैन की तरफ से उस पर हज फर्ज हो जायेगा, अलबत्ता अगर वह हज के जमाने से दूर जमाने में उमरा करने जायेगा तो उस पर हज फर्ज न होगा, उमरा करने से हज फर्ज नहीं होता हज के सफर की इस्तिताअत पर हज फर्ज होता है।

(रद्दुलमुहतारः3/459)

प्रश्नः क्या हज के सफर पर जाने से पहले तमाम हुकूक अदा करना जरूरी है, अगर उस पर ऐसा कर्ज है जिसकी अदायगी लम्बे वक्त में करना है मगर वह हज की इस्तिताअत रखता है तो क्या उस पर कर्ज होने के सबब हज फर्ज नहीं है?

उत्तरः अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "हज पिछले गुनाहों को खत्म कर देता है" (सहीह मुस्लिम हदीसः 1921)

हज से पिछले, अल्लाह के हक वाले गुनाह मुआफ हो जाते हैं हज से पहले जरूरी है कि लोगों के हुकूक अदा करने का एहतिमाम करे और हक वालों से मुआफी चाह ले ताकि अल्लाह तआला हज को "मकबूल" करे, लम्बे अरसे में अदा किया जाने वाला कर्ज हज के फर्ज होने में रुकावट नहीं, हज की इस्तिताअत होने पर हज फर्ज हो जायेगा।

प्रश्नः क्या कोई औरत अपने महरम के बगैर दूसरी औरतों के साथ जो अपने महरमों के साथ हज पर जा रही हों, हज पर जा सकती है? क्या बूढ़ी और जवान औरतों के हुक्म में कोई फर्क है?

उत्तरः हदीस शरीफ में आया है कि "कोई औरत सफर न करे सिवाय इसके कि उसके साथ कोई महरम हो"।

(बुखारी व मुस्लिम)

इस हदीस में बूढ़ी और जवान का फर्क नहीं है इसलिए हनफी उलमा कहते हैं कि औरत के लिए महरम के बगैर हज के सफर पर जाना जाइज नहीं है चाहे औरत बूढ़ी हो या जवान।

(अलबहरुर्राहकः 2/255)

प्रश्नः अगर कोई निकाह की मज्लिस में शरीक न हो पाये लेकिन वलीमा की दावत में शरीक हो तो क्या यह दुरुस्त है?

उत्तरः अगर कोई शख्स वलीमा की दावत में बुलाया गया हो और वहां कोई नाजाइज बात (नाच, बाजा आदि) न हो तो वलीमा की दावत में शरीक होना चाहिए चाहे वह निकाह की मज्लिस में शरीक न हुआ हो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब वलीमा की दावत दी जाये तो उसमें शरीक होना चाहिए। (मिश्कातः 2/287, ब हवाला बुखारी व मुस्लिम)

प्रश्नः इस जामाने में रिवाज है कि शादी की दावत में मेहमान मेजबान को कुछ नक्दी के साथ लिफाफा पेश करता है मेजबान उसके इन्तिजार में रहता है, इस अमल को जरूरी समझा जाता है शरीअत में इसका क्या हुक्म है?

उत्तरः यह कोई दीनी अमल नहीं है, बल्कि यह एक रस्म है, अगर कोई उसको शरई अमल समझे बगैर और किसी समाजी और अख़लाकी (नैतिक) दबाव के बगैर खुद से कोई रकम पेश कर दे तो इसकी गुन्जाइश है लेकिन अगर समाजी दबाव और रस्म व रवाज के तहत लोग उसे जरूरी समझें जैसा कि आज कल हो रहा है, तो खास इस मौके से यह लेन देन दुरुस्त नहीं है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न नुबूवत के बाद दस निकाह फरमाये हैं इसी तरह सहा–बए–किराम ने निकाह किये हैं लेकिन कहीं इस लेन देन का सुबूत नहीं मिलता है, कि दावते वलीमा के मौके पर इस तरह की रकम पेश की गई हो इसलिए इससे बचना जरूरी है खास तौर पर इस दौर में यह रस्म इस तरह चल पड़ी है कि मेहमान यह रकम न देने या कम देने पर शर्म महसूस करता है और मेजबान लिफाफा न मिलने या रकम कम मिलने पर बुरा मानता है यह किसी तरह जाइज नहीं है।

(किताबुल फतावाः 4/422)

प्रश्नः वलीमा की दावत कब

और कब तक होना चाहिए कुछ लोग बारात की रुख्सती से पहले दावत खिला देते हैं क्या इस का शुमार वलीमा की दावत में होगा, कुछ लोग निकाह के कई दिनों बाद वलीमा की दावत करते हैं, शरई हुक्म क्या है?

उत्तर: वलीमा अस्ल में मियाँ बीवी की यकजाई के बाद है, इसका मक्सद एक जाइज तअल्लुक का इजहार है जिस रात बीवी से तन्हाई में मिलना हो उसकी सुब्ह को या अगले दिन वलीमा करना सुन्नत है तीसरे दिन या उसके बाद के दिन में न ले जाना चाहिए। तिर्मिजी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि पहले दिन वलीमा का हक है दूसरे दिन सुन्नत है और तीसरे दिन शुहरत और दिखावा है।

(तिर्मिजीः 1/208)

शैखुल हिन्द मौलाना महमूद हसन ने तकरीरे तिर्मिजी में वजाहत (स्पष्टीकरण) की है कि तीसरे दिन अगर इन्तिजामी जरूरत के सबब वलीमा किया जाये शुहरत और दिखावा मकसूद न हो तो इस की गुन्जाइश है, इसलिए रस्म व रवाज और शुहरत के लिए तीसरे दिन वलीमा की इजाजत नहीं अलबत्ता अगर किसी जरूरत के सबब हो तो इस की गुन्जाइश है।

(तकरीरे तिर्मिजीः 31)

प्रश्न: अगर कोई शख्स अपनी बीवी की वफात के बाद अपनी आखरी उम्र में निकाह करे तो क्या उसके लिए भी वलीमा सुन्नत है या पहली बीवी के निकाह के बाद जो वलीमा किया था वह काफी होगा?

उत्तर: वलीमा निकाह का शुक्राना है और मुआशरे (समाज) में निकाह की इत्तिलाअ़ का जरीआ (सूचना का साधन) है इसलिए जब भी निकाह होगा, बीवी से तन्हाई में मिलाप के बाद वलीमा की दावत मस्नून होगी चाहे आखिर उम्र में निकाह हो, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मैमूना, हज़रत जुवैरिया और हज़रत सफीया रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना) से आखिर उम्र में निकाह किया था और तीनों में वलीमा किया था।

(सहीह बुखारीः 2/777)

प्रश्न: एक लड़के का निकाह हुआ वह रुख्सती से पहले सऊदिया चला गया वहां से दो साल बाद वापस हुआ अब वह रुख्सती कराके वलीमा करना चाहता है, निकाह के दो साल बाद इस वलीमे का क्या हुक्म है?

उत्तर: वलीमा मियां बीवी की पहली यकजाई के बाद मस्नून है चाहे यकजाई के बाद पहले दिन हो या दूसरे दिन जरूरत पड़ने पर तीसरे दिन की भी गुन्जाइश है उसके बाद साबित नहीं है, मज़कूरा वाकिये में चुंकि रुख्सती नहीं हुई थी, निकाह के दो साल बाद रुख्सती हुई है, इसलिए मियां बीवी की तन्हाई में यकजाई के बाद दूसरे दिन वलीमा की दावत की जा सकती है अगरचे निकाह दो साल पहले हुआ था, वलीमा शबे ज़ुफ़ाफ़ (मियां बीवी की पहली यकजाई वाली रात) के बाद दूसरे दिन मस्नून है।

(सहीह बुखारीः 5/66)

❖❖❖

गणित की ज़ुबान में कुर्आन के रहस्य

—इं0 जावेद इक़बाल

गणित यानि इल्मुल हिसाब एक महत्वपूर्ण विषय (Subject) है इसको एक ग़ैर दिलचस्प मज़मून समझा जाता है ख़ास तौर पर मदरसे के तल्बा (छात्र) और लड़कियां इससे दूर भागते हैं मगर इस वर्ष 2016, लखनऊ यूनिवर्सिटी की एक होनहार छात्रा कुमारी सामिया अहमद ने इस मजमून में एम0एस0सी0 की डिग्री के साथ सब से ज़ियादा 11 गोल्ड मेडल और एक सिलवर मेडल लेकर यह साबित कर दिया कि यह मज़मून भी लड़के लड़की सबके लिए यकसां तौर पर दिलचस्प हो सकता है बस शर्त है थोड़ी तवज्जुह और मेहनत की। वास्तविकता यही है कि अगर बचपन में ही दिलचस्प अन्दाज़ में शिक्षक बच्चों को पढ़ाये तो फिर गणित एक दिलचस्प मज़मून बन जाता है। यह भी एक हक़ीक़त है किइस मज़मून की बुन्यांद एक से लेकर दस तक के नम्बरों पर बचपन में उसी वक़्त रख दी जाती है जब बच्चा बोलना सीखता है। इन नम्बरों को (Rational) यानि हक़ीक़ी नम्बर कहा जाता है और वास्तव में यह 1 से 9 तक के नौ ही नम्बर हैं जिनको मिलाने पर बड़ी से बड़ी तरह की गिनतियां बनती हैं इन नम्बरों को पूर्ण अंक यानि मुकम्मल हिन्दसा भी कहा जाता है।

इन पूर्ण अंकों के अलावा कुछ ऐसी भी गिनतियां हैं जिन्हें भिन्न (Fraction, कसर) कहा जाता है। आधा, चौथाई, तिहाई इत्यादि तो पुराने ज़माने से बोला जाता रहा है मगर इसे लिखने का तरीक़ा, हिन्दसों की मदद से, वर्तमान काल में वजूद में आया है जो इस तरह है 1/2, 1/4, 1/3 आदि।

पूर्ण अंकों में एक की गिनती सबसे पहली गिनती है, जो कुरआन पाक की 40 सूरतों में 84 बार आई है तथा 9 की गिनती 40 सूरतों में 84 बार आई है तथा 9 की गिनती आख़िरी गिनती है जो तीन सूरतों में 4 बार आई है। इन दो को मिला कर लिखने से 19 का अंक बनता है। यह 19 का अंक बड़ा रहस्यमय अंक है। स्वयं अल्लाह तआला ने सूरः मुदस्सिर की आयत नं0 30 में दोज़ख पर तैनात फ़रिश्तों की गिनती 19 बताई है और फ़ौरन ही अगली आयत में फरमाया है कि यह संख्या दीन को न मानने वालों के लिए आज़माइश है। अगली पंक्तियों में इस अंक के रहस्यों से पर्दा उठाने का प्रयास किया जा रहा है।

1. कुर्आने पाक जिस आयत से शुरु होता है वह है "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" अरबी भाषा में लिखने पर इस आयत में 19 अक्षर हैं जिससे यह संकेत मिलता है कि वह अल्लाह सृष्टि के आरम्भ में भी था और वही आख़िरत में भी रहेगा, अव्वल व आख़िर बाकी रहने वाली ज़ात अल्लाह ही की है और उसके जैसा दूसरा कोई नहीं है। इसीलिए यह 19 का हिन्दसा किसी अन्य हिन्दसे से विभाजित नहीं होता।

2. इस आयत में अरबी भाषा के 4 शब्द हैं इस्म, अल्लाह, रहमान, रहीम। यह चारों शब्द पूरे कुर्आन में क्रमशः 19,2698,57 और 114 बार आए हैं। यह चारों संख्यायें 19 के अदद से क्रमशः 1,142,3 और 6 बार बराबर विभाजित होती हैं। इतना ही नहीं, इन हासिल संख्याओं का योग 152 भी 19 से पूर्ण विभाजित होता है।

3. कुर्आन पाक में कुल 114 सूरतें हैं प्रत्येक के आरम्भ में यह आयत लिखी जाती है मगर एक सूरः तौबा (नवीं) के आरम्भ में यह आयत नहीं लिखी जाती। यह कमी 27वीं सूरः अननमल के अन्दर इस आयत को ला कर पूरी हुई है। (आयत नं0 30) अब हम देखते हैं कि यह 114 का अंक भी 19 से पूरा विभाजित होने वाला अंक है।

4. अब सूरः तौबा से लेकर सूरः अन–नमल तक की सूरतों की गिन्ती करें (9–27) तो यहां भी 19 ही का अंक आता है।

5. कुर्आने पाक में कुल 6346 आयतें हैं यह गिनती भी 19 से पूरी पूरी विभाजित होती है और 6346 के अंकों का योग भी 19 ही है।

6. कुर्आन पाक में कुल 38 गिनतियों का तज़किरा हुआ है जिसमें 30 अदद पूर्ण अंक हैं और 8 भिन्न (Fraction, कसर) हैं, यह 38 का हिन्दसा भी 19 से पूर्ण विभाजित होता है।

पूर्ण अंक यह हैं:

1,2,3,4,5,6,7,8,9,10,11,12, 19,20,30,40,50,60,70,80, 90,100,200,300,1000, 2000,3000,5000,50000 और 1,00000 और भिन्न यह हैं: 1/2,1/3,1/4,1/5, 1/6,1/8, 1/10 और 2/3 हैं।

7. ऊपर दिए हुए 30 पूर्ण अंकों का योग 1,62,146 है, यह संख्या भी 19 से पूरी पूरी विभजित होती है। 1,62,146/19 =8534

8. सबसे पहली वही सूरः अलक़ की पहली पांच आयतों को देखें इसमें शब्दों की गिनती भी 19 ही है।

9. कुरआने पाक में अलबहर (यानि समन्दर) शब्द 32 बार आया है और अल बर्र (यानि खुशकी) शब्द 13 बार आया है, दोनों अंकों का योग 45 होता है। 32 का अंक 45 के अंक का 71.11 प्रतिशत है और 13 का अंक 45 के अंक का 28.89 प्रतिशत है। इससे यह संकेत मिला कि पूरी दुनिया में 28. 89 प्रतिशत खुशकी है और 71.11 प्रतिशत समन्दर हैं।

वर्तमान काल में अब तक समर खुशकी और पूरी दुन्या की जो नपाई की गई है वह इस तरह है–

दुन्या का कुल क्षेत्रफल= 510100500 वर्ग मीटर।

समन्द्रों का कुल क्षेत्रफल= 36114970 वर्ग मीटर।

खुशकी का कुल क्षेत्रफल= 148950800 वर्ग मीटर।

इन नापों के आधार पर समन्द्रों का क्षेत्रफल 70.8 प्रतिशत और खुशकी का क्षेत्रफल 29.2 प्रतिशत है। जो कि कुरआन के आधार पर निकाले गए प्रतिशत से बहुत मामूली अन्तर है। यह अन्तर नापने में इंसानी गलती के कारण है। क्योंकि अल्लाह तआला से ज़ियादा सही इल्म रखने वाला भला कौन हो सकता है।

कुर्आन पाक एक पवित्र ग्रंथ है, यह सीधे रास्ते की ओर मार्गदर्शन करने वाली किताब है, इसे

अल्लाह तआला ने अपने बन्दे और आख़िरी रसूल पर 23 साल की अवधि में उतारा है। जैसे जैसे हालात आए, घटनायें घटीं, उस समय के लोगों ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से प्रश्न किये, रसूलुल्लाह सल्ल0 के विरुद्ध शड़यंत्र रचे, वैसे वैसे खुद–ए–पाक की ओर से अपने रसूल की रहनुमाई और दुन्या के तमाम इंसानों को सीधी राह दिखाने के लिए कुरआन की आयतें उतरती रहीं। इस ग्रंथ में अल्लाह तआला ने पिछली कौमों के हालात अगले समय में आने वाले लोगों को सचेत करने और समझाने के लिए बयान किये हैं। पूरी कायनात में फैली हुई अपनी निशानियों का बयान करके अपनी कुदरत और शक्ति का प्रदर्शन कराया है। जैसे इस किताब में इंसान की पैदाइश का बयान बहुत विस्तार से किया गया है। जिसका ज्ञान इंसान को अभी दो ढाई सौ साल पहले तक बिलकुल नहीं था। इसी तरह पहाड़ों की रचना का ज्ञान, बादलों के बनने और बरसने का ज्ञान, समन्द्रों की संरचना और चांद सूरज की गर्दिश का निज़ाम, सारांश यह की विज्ञान की उन्नति से पहले तक इन बातों का इल्म इंसान को नहीं था मगर कुर्आन पाक में अल्लाह तआला ने 1400 साल पहले ही इन तमाम बातों को बयान करके इंसान को ग़ौर फ़िक्र (सोचने विचारने) का बार बार निमंत्रण दिया है। कुर्आन में बार बार यह फरमाया गया है कि इन सब चीज़ों में अक़्ल वालों के लिए बड़ी बड़ी निशानियां हैं "हमने अपनी निशानियां एक एक करके खोल दी हैं, उन लोगों के लिए जो इल्म वाले हैं"।

कुर्आन का बुन्यादी मक़सद अल्लाह की पहचान कराना है और इंसानों को हिदायत की राह पर लगाना है। मगर साथ ही साथ दुन्या में पाये जाने वाले सभी विषयों पर इसमें चर्चा भी की गई है। अपने अपने क्षेत्र के अनेक वैज्ञानिकों ने वर्तमान में कुरआन के विषयों को वैज्ञानिक दृष्टि से देखा और परखा है तथा आश्चर्य व्यक्त किया है कि जो तथ्य वर्तमान काल में सैकड़ों वर्ष की खोज के बाद प्रकाश में आये हैं उन का बयान कुरआन में पहले से मौजूद था।

इसी तरह गणित (रियाज़ी, मैथमेटिक्स) के विद्वानों ने जब कुरआन की आयतों पर उसके शब्दों पर, उसके अक्षरों पर गौर किया तो पाया कि कुरआन के वाक्य, शब्द और अक्षर गणित के कुछ फारमूलों से बंधे हुए हैं जिनमें से कुछ का उल्लेख ऊपर किया गया है। अक्षर, शब्द और वाक्य का इतना जटिल बंधन किसी भी व्यक्ति के बस की बात नहीं है अतः इन हक़ीकतों से यह सिद्ध होता है कि यह पैग़ाम कायनात के बनाने वाले खुदा के अलावा अन्य का नहीं हो सकता, चुनांचे सूरः हूद की पहली ही आयत में फरमा दिया गया है कि "यह वह किताब है जिस की आयतें सुदृढ़ (मुस्तहकम) और विस्तार पूर्वक एक तत्वदर्शी (हकीम) जानकार सत्ता की ओर से हैं, अब तुम्हें चाहिए की अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो"।

❖❖❖

लहसुन प्याज और पुदीने के लाभ

—इदारा

लहसुन को प्याज, अदरक और नमक, मिर्च के साथ दाल तथा तरकारियों में प्रयोग किया जाता है अगर उसको कच्चा खाया जाय तो उसका स्वाद तीव्र तथा गन्ध अप्रिय होती है, परन्तु अल्लाह ने इसमें कुछ गुण भी रखे हैं, जिनके कारण यह आहार का एक भाग बन गया है, उदाहरणार्थ मांस, मछली आदि की बिसायंध वाली वस्तुओं की बिसायंध (दुर्गन्ध) दूर करता है, इसके प्रयोग से मनुष्य विकृत जलवायु की हानि से सुरक्षित रहता है, यह आमाशय को शक्ति प्रदान करता है तथा आमाशय की वायु निकालता है एवं खांसी तथा दमा के बलगम को निकालता है, फालिज, लक्वा तथा सुनभरी में लाभ देता है रक्त के अधिक दबाव को कम करता है और कुछ चर्म रोगों को दूर करता है। उक्त रोगों में लहसुन प्राचीन काल से प्रयोग किया जाता रहा है आधुनिक काल में अनुसंधान ने भी उसके लाभों की पुष्टि कर दी है।

इसमें एक विशेष प्रकार का तेल होता है जो मानव शरीर में पहुंचने के पश्चात उसकी निकासी फेफड़ों तथा त्वचा द्वारा होती है अतः लहसुन फेफड़ों की सिल, खांसी, दमा तथा काली खांसी में लाभ देता है और उसकी गन्ध इन रोगों में विशेष कर लाभदायक है, काली खांसी में लहसुन के लाभ से साधारण लोग भी अवगत थे अतएव लहसुन के जवे छील कर धागे में पिरोकर काली खांसी वाले बच्चे के गले मे पहना देते थे इस प्रकार उसकी गन्ध नाक द्वारा फेफड़ों में पहुंच कर आराम देती थी।

इसके अतिरिक्त काली खांसी में लहसुन के प्रयोग की विधि यह भी थी कि लहसुन के जवे छील कर बच्चे के पांव के नीचे रख कर जुर्राब या जूते पहना देते थे।

फेफड़ों की सिल (क्षय रोग) में लहसुन को सूंघना तथा एक दो जवे मधु में मिला कर चाटना लाभदायक है।

फालिज तथा लक्वा में लहसुन का प्रयोग लाभदायक है, गठिया तथा खांसी दमा में एक दो जवे मधु में मिला कर प्रतिदिन चटाते हैं।

फुलभरी, छेप और दाद पर लहसुन को नोशादर के साथ पीस कर लगाने से लाभ होता है।

बालखोरा (एक रोग है जिसमें बाल झड़ जाते हैं उसको बलखोरा भी कहते हैं) इसमें दाढ़ी मूंछ तथा सिर के बाल जगह जगह से झड़ जाते हैं, लहसुन का प्रयोग इस रोग में जादू जैसा काम करता है लहसुन के तीन चार जवे छील कर एक चुटकी सुरमे में मिलाकर और पीस कर कई बार लगाने से बाल बहुत जल्द निकल आते हैं और बाल खोरा का रोग समाप्त हो जाता है।

आधा सीसी के दर्द में जिधर दर्द हो रहा है उधर लहसुन पीस कर लगाने से

दर्द दूर हो जाता है, फोड़ों पर लहसुन पीस कर लगाने से फोड़े घुल जाते हैं।

अगर कान में फुंसी हो तो लहसुन का पानी टपकाने से फुंसी घुल जाती है या पक कर सूख जाती है।

अगर दाँत में कीड़ा लगा हो और तेज दर्द हो रहा हो तो लहसुन का जवा छील कर, गर्म करके दाँत के नीचे रखने से आराम मिलता है।

लहसुन छिला हुआ 10 ग्राम, सेंदूर 5 ग्राम दोनों को पीस कर 50 ग्राम सरसों के तेल में पका कर छान लें, यह तेल बहते कान में टपकाने से बहुत लाभ देता है।

बिच्छू के डंक मारने पर लहसुन पीस कर लगाने और लहसुन खिलाने से लाभ होता है।

लहसुन के जवे सरसों के तेल में पका कर छान लें यह तेल गुनगुना करके गठिया के दर्द में लगाने से बहुत लाभ मिलता है।

प्याज का लाभ

प्याज़ एक घरेलू प्रयोग की साधारण वस्तु है यह सालन (रसा) का एक महत्वपूर्ण भाग है प्याज़ विषैले प्रभाव से बचाती तथा महामारी रोगों से सुरक्षित रखती है।

महामारी काल में प्याज बारीक काट कर सिरके में या लेमू के रस में मिला कर खाने के साथ खाना चाहिए इससे महामारी से सुरक्षा रहती है हैजे के रोगी को प्याज़ का रस और चूने का थीरा पानी दस दस ग्राम मिला कर दो दो घण्टे के अंतराल से पिलाना रोगी को बड़ा लाभ देता है। और रोगी ठीक हो जाता है।

लू काल में प्याज़ का प्रयोग लू के विकृत प्रभाव से बचाता है। उसको सूंघते रहना भी लू काल में लाभदायक है। प्याज का रस शुद्ध मधु, घी और दो अण्डे की ज़र्दी (पीला भाग) 20,20 ग्राम एक प्याले में चमचे से फेटें फिर उसे आग पर पकायें और सवेरे बासी मुंह खायें यह शक्ति प्रदान करने वाली उत्तम औषधि है, प्याज़ के 10 ग्राम रस को 10 ग्राम शुद्ध मधु में मिला कर गुनगुना करके पीने से बैठी हुई आवाज़ खुल जाती है।

अगर बवासीरी मस्से फूले हुए हों और रक्त न निकलने के कारण रोगी दर्द से व्याकुल हो तो प्याज़ को आग में भुलभुला कर दो टुकड़े करके मस्सों पर बांधने से मस्से खुल जाते हैं और रक्त निकलने लगता है, इस प्रकार रोगी को आराम मिल जाता है। भुल भुलाई हुई प्याज़ अगर फोड़े फुनसियों पर बांधी जाये तो वह उनको पका कर बहुत जल्द फोड़ देती है, अगर कान में फुन्सी हो तो भुलभुलाई हुई प्याज़ का रस टपकाने से फुंसी फूट जाती है और रोगी को दर्द से आराम मिल जाता है।

नजला और जुकाम बन्द हो तो प्याज़ को तराश (काट) कर सूंघने से खुल जाता है।

प्याज़ का मरहम हर प्रकार के घाव विशेष कर छाती के घाव में बहुत लाभदायक है, तिल के 100 ग्राम तेल में 20 ग्राम प्याज़ कतर कर उसमें 25 ग्राम नीम की हरी पत्तियां डाल कर जलायें फिर उसमें 10 ग्राम मोम पिघलायें, मरहम तैयार हो गया।

पुदीना का लाभ

पुदीना सालन दाल आदि में सुगन्ध के लिए डाला जाता है, सुगन्ध देने के साथ साथ यह खाने को पचाता भी है, आमाशय को शक्ति प्रदान करता है तथा उसकी वायु को बाहर निकालता है, अतः इसकी चटनी खाने के साथ खाते हैं। पुदीना में विष के विषैले पन को दूर करने की क्षमता भी है, अतः कुछ विषों को दूर करने में भी प्रयोग किया जाता है, अतएव तुख्मा (पेट फूलना) तथा हैज़ा रोग में पुदीना 5 ग्राम, छोटी इलाइची 2 ग्राम, 500 ग्राम पानी में उबाल कर कई बार पिलाने से मतली और उल्टी बन्द हो जाती है, पेट का दर्द दूर हो जाता है और प्यास कम हो जाती है।

फीलपा (हाथी पांव रोग) डुवाली (जिस में पिण्डलियों की नसें फूल कर मोटी हो जाती हैं) इसमें 5 ग्राम पुदीना को पीस कर फाडे हुए दूध का पानी 100 ग्राम के साथ कुछ दिनों तक बराबर पीते रहने से इस रोग में लाभ मिलता है। बिल्ली, न्योले या चूहे ने काट लिया हो या बिच्छू ने डंक मारा हो तो पुदीना पीस कर लगाने से आराम हो जाता है।

हरे पुदीने का रस निकाल कर टपकाने से नाक, कान और दूसरे अंगों के घाव के कीड़े मर जाते हैं, पित्ती रोग में भी पुदीना लाभदायक है, हरा पुदीना 10 ग्राम और अगर सूखा हो तो 15 ग्राम लाल शकर 20 ग्राम पानी में उबाल कर दो तीन बार पिलाने से पित्ती का रोग दूर हो जाता है।

(हमदर्द की पुस्तक "दीहाती मुआ़लिज" से अनुवाद)

❖❖❖

स्वच्छता

स्वच्छता के दो प्रकार हैं, गन्दगियों से स्वच्छता तथा बुराईयों से स्वच्छता, कूड़ा करकट, मलमूत्र तथा मैल कुचैल से स्वच्छता आवश्यक है परन्तु चोरी, डकैती, क़त्ल, झूठ, घूस, अत्याचार, कोई नशा करना काम चोरी करना आदि बुराइयों से स्वच्छता पहली स्वच्छता से कहीं अधिक अनिवार्य है। आप बताएं एक कर्मचारी अपना आफिस खूब साफ रखे, आफिस के आस पास गन्दगी भटकने न दे परन्तु वह आफिस देर से आये, काम न करे घूस ले कर काम करे धूम्रपान करे दारू पिये, लड़कियों पर बुरी नज़र डाले आदि तो आप उससे सर्व प्रथम कौन सी स्वच्छता चाहेंगे?

स्वरचित महदी तथा ईसा मसीह से सावधान

—इदारा

इस्लाम आकाश से उतरा हुआ अन्तिम विश्व धर्म है, कुरआन अल्लाह की भेजी हुई अन्तिम पुस्तक है, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के अन्तिम रसूल हैं, अल्लाह तआला ने घोषित कर दिया कि धर्म पूर्ण कर दिया गया (5:2) अल्लाह के रसूल ने घोषणा कर दी कि मैं अन्तिम नबी हूं मेरे पश्चात कोई नबी होता तो उमर होते (तिर्मिज़ी) इन घोषणाओं से ज्ञात हुआ कि अब किसी नये नबी का आना असम्भव है, क़ियामत से पहले ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरना इस के विरुद्ध नहीं कि वह पहले से नबी हैं, एवं वह हमारे अन्तिम नबी की शरीअ़त पर चलेंगे।

उनकी घटना इस प्रकार है कि जब यहूदी उनको पकड़ कर सूली पर चढ़ाने ले चले तो अल्लाह की ओर से यह हुआ कि उन्हीं के रूप का कोई आदमी था उसे यहूदियों ने सलीब पर चढ़वा दिया और अल्लाह तआ़ला ने ईसा अलैहिस्सलाम को शरीर के साथ जीवित आकाश पर उठा लिया। वह चतुर्थ आकाश पर जीवित हैं, क़ियामत से पहले आसमान से दमिश्क़ की मस्जिद के मनारे पर भोर के समय उतारे जायेंगे, फिर नीचे आकर महदी ये आख़िरुज़्ज़मा के पीछे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ेंगे, नुबूवत के समाप्त होने से सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिए मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ साहिब की किताब "ख़त्मे नुबूवत" देखना चाहिए जिसमें 99 कुरआनी आयतों 210 हदीसों और इजमाअ़े सहाबा से ख़त्मे नुबूवत को सिद्ध किया गया है।

ख़त्मे नुबूवत पर उम्मत ऐसा पक्का विश्वास रखती है कि अब नुबूवत का दावा करने वाले व्यक्ति से यह पूछना भी अवैध जानती है कि तुम्हारी नुबूवत का चिन्ह क्या है, अब कोई नुबूवत का दावा करने वाला अगर आसमान में उड़े पानी पर चले तथा आग पर सोये तब भी उसको नबी न माना जायेगा और इन कार्यों को शैतानी कार्य समझा जायेगा, अन्तिम सन्देष्टा के पश्चात अब नया सन्देष्टा कहां? यही कारण था कि सहाबा काल से अब तक जिसने भी नुबूवत का दावा किया उम्मत ने उसको उसके कर्म का भोग करा दिया, कभी तो इसमें बड़ी आहुति देना पड़ी अतएव मुसैलिमा कज़्ज़ाब को मारने में जो युद्ध हुआ उसमें उसके 28000 लोग मारे गये तथा मुसलमानों के भी 12000 लोग शहीद हुये, जिसमें अनेक हाफिज़ सहाबा भी थे। मुसैलिमा कज़्ज़ाब (अर्थात झूठा) हमारे हुज़ूर को नबी मानता था साथ ही अपनी नुबूवत का भी दावा करता था, इन्हीं झूठे, नुबूवत का दावा करने वालों में मिर्जा गुलाम अहमद क़ादियानी भी थे यदि

इस्लामी शासन होता तो इनका भी वही परिणाम होता जो कज़्ज़ाब का हुआ था, परन्तु इनके पीछे तो इस्लाम का दुशमन, अंग्रेजी शासन था, जिसने शैतान की कामना पूरी करदी और क़ादियानियत चल पड़ी।

यह सत्य है कि क़ादियानी तहरीक (आन्दोलन) पूरे विश्व में नवीन साधनों के साथ उच्च स्तर पर इतना अधिक व्यय हो रहा है कि उसका अनुमान लगाना भी कठिन है और यह खर्च उसे कहां से मिलता है इसका पता लगाना भी दुर्लभ है, संभावना है कि इस्लाम विरोधी विश्व की बड़ी शक्तियां इस्लाम को हानि पहुचाने के उद्देश्य से इसको सहयोग दे रही हैं, यह भी सत्य है कि कुर्आनिक समाचारानुसार "नुमत्तिअुहुम क़लीलन (31:32)" के अधीन इनको सांसारिक धन प्राप्त है, इनके करोड़पती व्यापारी भी क़ादियानियत प्रसारण पर भारी व्यय कर रहे हैं।

इनकी कार्यविधि यह है कि इनके धर्म प्रचारक जिस पिछड़े देश या पिछड़े क्षेत्र में पहुंचते हैं वहां आवश्यकतानुसार प्राइमरी स्कूल, हाई सकूल, कालेज, अस्पताल आदि का प्रबन्ध करते हैं, तथा इन लोक हित कार्यों द्वारा वहां के लोगों का मन मोहित कर लेते हैं, इन स्कूलों, कालेजों, अस्पतालों आदि में मुसलमानों को नौकरियां देकर तथा मुस्लिम बच्चों को सांसारिक शिक्षा प्रस्तुत करके क़ादियानियत के डोरे डालते हैं, इस प्रकार यह कुछ सफलता प्राप्त कर लेते हैं, हमारा लखनऊ तो मिर्ज़ा जी के जन्म के पूर्व ही से इस्लामिक शिक्षा का केन्द्र रहा है, और बड़ी उन्नति के साथ अब भी उसकी यह केन्द्रीयता अवशिष्ठ है, अतः लखनऊ में तो क़ादियानियों की दाल न गल सकी परन्तु अभी थोड़े दिनों से हमारी अचेतना के कारण, लखनऊ के आस पास के ग्रामों में उन्होंने अपना काम चला रखा है।

ऐसे ग्राम जहाँ मस्जिदें नहीं हैं परन्तु मुसलमानो के कुछ घर हैं इस प्रकार के बहुत से ग्रामों में क़ादियानी मुबल्लिग़ (क़ादियानी धर्म प्रचारक) पहुंचे, मुसलमानों को जोड़ा, उनके हालात पूछे, किसी को सहायता की आवश्यकता हुई तो उसको सहायता दी, कुरआनिक शिक्षा के नाम से सभा का आयोजन किया ,मुस्लिम बच्चों के लिए मकतब खोल दिये, बच्चों और बड़ों को ईदी और दूसरे बहानों से उपहार प्रस्तुत किये, फिर जब पूर्णतया मोहित कर लिया तो एयर कन्डीशन बसों में भर कर क़ादियान लेगये, वहां उनकी खूब आव भगत की और अच्छे उपहार देकर वापस लाये, बेचारे साधारण मुसलमान जो इस्लाम धर्म की शिक्षा से भली भांति अवगत न थे, उनका कलमा, नमाज़, तथा कुरआन पाठ देख कर धोखा खा गये और उनकी हर बात मानने लगे तथा उनसे बार बार मिर्ज़ा गुलाम अहमद का नाम सुन कर समझ बैठे कि वह कोई महा पुरुष थे, फिर इन मुसलमानों को समझाया कि हदीस में जो ख़लीफ़ा

महदी के प्रकट होने और ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान से उतरने की बात है उसको उलमा लोग समझे नहीं, लोगों को धोखा हुआ कि वह दो हैं, वास्तव में वह दोनों एक ही हैं और वह मिर्ज़ा हैं, जब यहां तक बात लोगों ने मान ली तो बताया कि वह भी कैसा मोमिन जो खुदा से बात न करे, और फिर समझा दिया कि मिर्जा खुदा से बात चीत करते थे और उनके पास वही आती थी इस प्रकार यह लोग सीधे सादे मुसलमानों को इस्लाम से निकाल कर क़ादियानियत की पथ भ्रष्टता में ले आते हैं। इनकी इन चेष्टाओं का ज्ञान हुआ तो मुसलमान भी अपने भाइयों को सत्य मार्ग से बिचलित देख कर दुखी हुए और उनके सहयोग को उठ खड़े हुए, दारुल उलूम देवबन्द, दारुल उलूम नदवतुल उलमा तथा दारुल मुबल्लिग़ीन लखनऊ ने बड़ी बड़ी कानफ्रेंसें कराई, सबने अपने अपने यहां मुसलमानों को क़ादियानियत के कुमार्ग से बचाने के लिए विभाग खोले और ज़ोरों से काम होने लगा ,ग्रामों के दौरे होने लगे, उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी तथा अरबी में पहले ही से इस विषय पर पुस्तकें थीं, नई पुस्तकें और पुस्तकायें भी तैयार हुई हिन्दी में भी किताबें तैयार हुई इस विषय पर मूल पुस्तक इलयास वरनी की "क़दियानियत" है, मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी रह0 की भी किताब "क़ादियानियत" उर्दू, अरबी तथा अंग्रेज़ी में उपलब्ध है हिन्दी में उसका सारांश भी छप चुका है। मौलाना मुहम्मद मन्जूर नुअ़मानी की तीन पुस्तकायें हैं उनमें से "क़ादियानियत पर ग़ौर करने का सीधा रास्ता" बहुत ही सरल संक्षिप्त तथा प्रभाव शाली है, मौलाना लाल हुसैन अख़्तर साहब की "इह़तिसाबे क़ादियानियत" पढ़ने योग्य है। "सुबूत हाज़िर हैं" मुहम्मद मतीन ख़ालिद साहब की पुस्तक 840 पृष्ठ की है जो बड़ी ही ज्ञान कारी है, तातपर्य यह कि अनेक पुस्तकें क़ादियानियत की पथ भ्रष्टता समझने के लिए प्राप्त हैं, पाकिस्तान में तो यहां से अधिक काम हुआ है, और पकिस्तान में सरकारी तौर पर क़ादियानी लोग मुसलमान नहीं समझे जाते, मक्का, मदीना, अरब देश अपितु विश्व के सभी मुस्लिम विद्वानों ने क़ादियानियों को इस्लाम से निष्कासित ही नहीं इनको इस्लाम का शत्रु भी बताया है अतः हर योग्य मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि वह अपने मुसलमान भाइयों को क़ादियानियत की पथभ्रष्टा से बचाने के लिए उठ खड़ा हो, यह पंक्तियां भी इसी विषय की एक चेष्ठा हैं।

यूं तो मिर्ज़ा जी और उनके खुलफ़ा की आचरण रहित इतनी बातें स्वयं उनकी पुस्तकों से सिद्ध हैं कि उनकी जानकारी के पश्चात मिर्ज़ा जी को एक सज्जन पुरुष कहना भी अनुचित है उनको महा पुरुष, समझना तो दूर की बात है, परन्तु हम यहां उनकी केवल उन दो बातों को ले रहे है जिनसे वह साधारण मुसलमानों को धोखा

दे लेते हैं उनमें से एक बात तो हज़रत ख़लीफ़ा महदी का प्रकट होना, दूसरी ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरना, पहले तो यह समझना चाहिए कि हदीस से सिद्ध है कि यह दो अलग अलग व्यक्ति हैं, मिर्जा जी ने दोनों को एक बताया और फिर सिद्ध किया कि वह व्यक्ति मैं ही हूं। फिर यह कि इन दोनों महा पुरुषों के चिन्ह हदीस में प्रत्यक्ष रूप में बताये गये हैं मिर्ज़ा क़ादियानी में उनमें से कोई चिन्ह नहीं पाया जाता फिर भी मिर्ज़ा ने उन चिन्हों को जिस प्रकार अपने में सिद्ध करने की चेष्टायें की हैं, वह मिर्ज़ा जी के झूठे होने के प्रमाण में साक्षी हैं खलीफा महदी के चिन्ह जो हदीस से सिद्ध हैं वह प्रस्तुत हैं, हर चिन्ह को मिर्ज़ा जी में ढूढने की चेष्टा भी की गई है। उसके पश्चात हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की निशानियों में से कुछ निशानियां लिखी गई हैं, ताकि पाठक मिर्ज़ा जी की पथभ्रष्टा से अवगत हो कर उनके धोखे में न आयें।

ख़लीफ़ा महदी आख़िरुज़्ज़मा और मिर्ज़ा क़ादियानी

1. हज़रत महदी अहलेबैत अर्थात हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुल से होंगे। (तिर्मिज़ी)	मिर्ज़ा क़ादियानी मुग़ल परिवार से थे।
2. हज़रत महदी हज़रत हसन रज़ि0 की सन्तान में होंगे। (अबूदाऊद)	मिर्ज़ा क़ादियानी मुग़लों की सन्तान से थे।
3. हज़रत महदी का शुभ नाम मुहम्मद होगा (महदी उनकी उपाधि है) (अबूदाऊद)	मिर्ज़ा क़ादियानी का नाम गुलाम अहमद था।
4. हज़रत महदी के पिता का नाम अब्दुल्लाह होगा। (अबुदाऊद)	मिर्ज़ा के पिता का नाम गुलाम मुर्तज़ा था।
5. हज़रत महदी मदीने से मक्के आयेंगे। (अबूदाऊद)	मिर्ज़ा क़ादियानी न मक्का जा सके न मदीना
6. हज़रत महदी मक्के में प्रकट होंगे। (अबूदाऊद)	मिर्ज़ा क़ादियान में प्रकट हुये।
7. सर्व प्रथम काबे के दो रुक्नों के बीच 313 लोग हज़रते महदी से बैअ़त करेंगे। (मुस्तदरक)	मिर्ज़ा क़ादियानी स्वयं अंग्रेज़ी शासन से बैअ़त हुए।
8. हज़रते महदी अरब देश के शासक होंगे। (अबूदाऊद)	मिर्ज़ा जी अंग्रेजी शासन के गुलाम रहे।
9. हज़रते महदी के आने से पूर्व विश्व में अन्याय तथा अत्याचार होगा। (अबूदाऊद)	मिर्ज़ा क़ादियानी के आने से पहले से लेकर जाने के पश्चात तक अंग्रेज़ों का अत्याचार चलता रहा परन्तु मिर्ज़ा जी ने उसे न्याय पूर्ण शान्तिकाल बताया।

10. हज़रत महदी संसार को न्याय से भर देंगे। (अबूदाऊद)	मिर्ज़ा क़ादियानी जब अंग्रेज़ों के गुलाम रहे तो न्याय क्या करते अलबत्ता अंग्रेज़ों के अत्याचारों को न्याय कह कर खूब भ्रष्टाचार फैलाया।
11. जब महदी अरब के शासक होंगे तो उनसे युद्ध के लिए शाम से चली हुई फौज़ बैदा स्थान पर धंस जायेगी। (अबूदाऊद)	मिर्ज़ा जी से क़लमी युद्ध करने उलमा आये और मिर्ज़ा जी अपने कथनानुसार झूठे सिद्ध हो कर संसार से चले गये।
12. ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से उतर कर फ़ज्र की नमाज़ हज़रते महदी के पीछे पढ़ेंगे। (मुस्तदरक)	बनावटी महदी मिर्ज़ा क़ादियानी, स्वयं ही ईसा बन बैठे, महदी के पीछे नमाज़ पढ़ने का प्रश्न ही नहीं उठता।
13. हज़रत महदी लोगों में खूब धन बांटेंगे। (मुस्तदरक)	मर्ज़ा क़ादियानी ने लोगों से लेकर खूब धन बटोरा।
14. हज़रत महदी ईसा अलैहिस्सलाम के साथ दज्जाल से लड़ेंगे। (मुस्तदरक)	मिर्ज़ा क़ादियानी सारे मुसलमानों से लड़ते और उनको काफिर बताते रहे, यहाँ तक कि दुन्या से चले गये।

आजकल फिर भारत में कोई व्यक्ति अपने को महदी तथा ईसा अलैहिस्सलाम बता कर उम्मत को पथभ्रष्ट कर रहा है उलमा का कर्तव्य है कि उसका खण्डन करके उम्मत को उसकी पथभ्रष्टता से बचायें। उसके खण्डन में इस तालिका से मदद ली जा सकती है।

हदीसः तिर्मिज़ी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुन्या उस समय तक समाप्त न होगी जब तक मेरे अहले बैत (कुल) में से एक व्यक्ति अरब का शासक (बादशाह) न हो ले जिसका नाम मेरे नाम के अनुकूल होगा। (अर्थात मुहम्मद)

हदीसः सुनने अबी दाऊद में अबूइस्हाक़ सबीअ़ी से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ि0 ने अपेन सुपुत्र हज़रते हसन रज़ि0 को देखते हुए कहा कि यह मेरा बेटा सैयद है जैसा कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसे सैयद का नाम दिया है, इसकी सन्तान में एक व्यक्ति पैदा होगा उसका वही नाम होगा जो तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम है चरित्र तथा आचरण में इस (हसन रज़ि0) के समान होगा परन्तु रंग तथा रूप में इसके समान होगा। वह पृथ्वी को न्याय से भर देगा।

हदीसः सुनने अबी दाऊद

हदीसः मुस्तदरक में हज़रते अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि महदी मेरी नस्ल से होगा, उसकी नाक सत्वां, ऊँची तथा माथा सुन्दर चमकीला होगा,

संसार को न्याय से भर देगा जैसे वह पहले अन्याय तथा अत्याचार से भर गया होगा, और उंगलियों पर गिन कर बताया कि वह (ख़िलाफ़त के पश्चात) सात वर्ष तक जीवित रहेगा।

हदीसः मुस्तदरक में हज़रत अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में महदी पैदा होगा, अल्लाह तआ़ला उस पर (अर्थात उसके काल में) खूब वर्षा करेगा और धरती अपनी उपज उगल देगी और वह (अर्थात महदी) लोगों को धन समान रूप से बांटेगा, उसके (शासन) काल में पशुओं की अधिकता तथा उम्मत की महानता होगी वह (ख़िलाफ़त के पश्चात) सात या आठ वर्ष जीवित रहेगा।

हदीसः मुस्तदरक में हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने महदी का वर्णन किया और कहा कि वह फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की औलाद से होगा।

अब ईसा मसीह अ० के विषय में भी मिर्ज़ा जैसों को परखये– हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान से उतरने पर जो बातें ह़दीस से सिद्ध हैं उनमें से एक बात भी मिर्ज़ा क़ादियानी में नहीं पाई जाती। यहां उनमें से कुछ बातें जो हदीस में मौजूद हैं प्रस्तुत की जा रही हैं–

1. पूर्वी दमिश्क़ की मस्जिद के सफ़ेद मीनार के पास उतरेंगे। (मुस्लिम) (मिर्ज़ा क़ादियानी बकवास करते हैं दमिश्क़ से तातपर्य ऐसा नगर है जिसमें यज़ीदी रहते हैं, क़ादियान में यह गुण विद्यमान है अतः दमिश्क से अर्थ क़ादियान है)।

2. दो चादरें ओढ़े हुए उतरेंगे (मुस्लिम) (मिर्ज़ा क़ादियानी ने कहा दो चादरों से तातपर्य मेरे दो रोग हैं, ऊपरी भाग के रोग दिल का दौरा आदि, तथा नीचे के भाग में शकर आना और एक एक रात में सौ सौ बार पेशाब करना आदि)।

3. उतरते समय दो फिरिश्तो के बाजुओं पर हाथ रखे होंगे। (मुस्लिम)।

4. फज़्र के समय आसमान से उतर कर प्रकट होंगे (मुस्नद अहमद) (मिर्ज़ा क़ादयानी कहते हैं कि स्वयं उनका गर्भ जब धुल गया तो वह ईसा बन गये)।

5. फ़ज़्र के समय ही दज्जाल से युद्ध के लिए मुसलमानों को आवाज़ देंगे।

(मुस्नद अहमद)

6. इमाम महदी के पीछे फज़्र की नमाज़ पढ़ेंगे। (मुस्लिम)

7. उनकी सांस के प्रभाव से काफ़िरों की मौत होगी। (मुस्लिम)

8. जहां तक वह देखेंगे वहां तक उन की सांस की हवा जायेगी। (मुस्लिम)

9. दज्जाल को लुद्द नगर में बध करेंगे। (मुस्लिम)

10. न्याय के साथ शासन करेंगे। (मुस्लिम)

(मिर्ज़ा क़ादियानी को कहीं का शासन न मिल सका)

11. सलीब तोडेंगे (मुस्लिम) (सारे ईसाई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर इस्लाम ले आयेंगे अतः सलीब की आवश्यकता न रह जायेगी)

12. लड़ाई खत्म कर देंगे (इब्नि माजा) (समस्त संसार

के लोग एक मत इस्लाम पर होंगे इस प्रकार किसी से किसी की लड़ाई न रहेगी)

13. इबादत का महत्व इतना बढ़ जायेगा कि एक सजदे को समस्त संसार तथा जो कुछ उसमें है उस सब से उत्तम समझा जायेगा। (मुस्लिम)

14. धन की अधिकता होगी जो खूब बांटा जायेगा।

(इब्नि माजा)

(मिर्जा क़ादियानी ने अपने जीवन में धन खूब एकत्र किया परन्तु बांटा नहीं)।

15. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कब्र के दर्शन करेंगे। (मुस्लिम)

(मिर्जा क़ादियानी मदीना कभी नहीं गये)।

16. रौहा से तलबियाः कहते हुए निकलेंगे (मुस्लिम)

(रौहा मक्का व मदीना के बीच एक स्थान है)

17. ह़ज या उमरा या दोनों अदा करेंगे। (मुस्लिम)

(मिर्जा क़ादियानी ने कभी न हज किया न उमरा)।

18. 'याजूज व माजूज' निकलेंगे। (मुस्लिम)

19. याजूज व माजूज से न कोई लड़ सकेगा न उनका वध कर सकेगा। (मुस्लिम)

20. ईसा अलैहिस्सलाम अपने साथियों को लेकर तूर पहाड़ पर चले जायेंगे। (मुस्लिम)

21. समस्त याजूज व माजूज गरदन की एक बीमारी से मर जायेंगे। (मुस्लिम)

22. विशेष प्रकार की चिड़या उनके शवों को उठा ले जायेगी। (मुस्लिम)

23. वर्षा से ज़मीन की धुलाई होगी। (मुस्लिम)

24. ईसा अलैहिस्सलाम अपने साथियों समेत तूर पहाड़ से नीचे आयेंगे। (मुस्लिम)

25. खूब खेती उगेगी। (मुस्लिम)

26. सात वर्ष जीवित रहेंगे (मुस्लिम) (एक रिवायत 45 वर्ष की भी है)।

27. किताब व सुन्नत पर चलते हुए 40 वर्ष तक दुन्या में रह कर वफ़ात पायेंगे (अबूदाऊद)

28. मेरी कब्र में दफ़न होंगे (बुखारी) अर्थात क़ब्र के पास)

29. फिर एक हवा चलेगी जिससे सारे ईमान वालों का देहांत हो जायेगा। (मुस्लिम)

(ताकि वह क़ियामत का भयंकर भूकम्प न देखें)

मिर्ज़ा क़ादियानी ने जो दावा किया कि वह स्वयं मसीहे मौऊद तथा महदी हैं, आपने देख लिया कि हदीस में वर्णित कोई चिन्ह भी मिर्जा में न पाया गया न हज़रते महदी का न मसीहे मौऊद का और सिद्ध हुआ कि मिर्ज़ा का दावा निरा झूठ था, उनकी समस्त भविष्य वाणियां झूठी निकलीं, जैसे उनके जीवन में न आथम मरा, न मौलाना अमृतसरी मरे, न उनका मुहम्मदी बेगम से निकाह हुआ, न मिर्ज़ा के निर्धारित समय पर मुहम्मदी बेगम के पति तथा पिता का देहांत हुआ आदि।

यह सत्य है कि मिर्ज़ा क़ादियानी को इबलीस वही करता था तभी तो उन्होंने कहा कि वह औरत बने और वह मरियम बने, गर्भित हुए, फिर उनका गर्भ धुल गया और वह ईसा हो गये, फिर वह ईसा से भी उच्च हो गये और साफ़ कह दिया (कश्तिये नूह)

'इब्ने मरियम के ज़िक्र को छोड़ो उससे अफ़ज़ल गुलाम अहमद है, (अलअ़याजु बिल्लाहि)' जब किसी से श्रद्धा हो जाती है तो उसके दोष भी उसको गुण दिखने लगते हैं, यही हाल कुछ मिर्ज़ाइयों का भी है, ऐसी दशा में उनको चाहिए कि वह मिर्जा जी का अनुकरण करके मिर्जाई जन्नत प्राप्त करें, परन्तु दूसरे मुसलमानों को सत्य मार्ग (सिराते मुस्तक़ीम) से पथ

भ्रष्ट (गुमराह) न करें, अगर वह ऐसा करते हैं तो हम मुसलमानों का कर्तव्य होगा कि अपने भाइयों को पथ भ्रष्टता से बचाने हेतु मिर्ज़ा कादियानी का परिचय करायें और अपने भाइयों को जहन्नम की आग से बचायें।

हदीसः सहीह मुस्लिम में हज़रते सौबान रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में खूब झूठ बोलने वाले पैदा होंगे उनमें से हर एक दावा करेगा कि मैं सन्देष्टा हूं परन्तु मैं अन्तिम सन्देष्टा हूं मेरे पश्चात कोई संदेष्टा (नबी) नहीं। मुस्लिम ही की एक रिवायत में और है कि उस समय तक क़ियामत न आयेगी जब तक तीस के लगभग दज्जाल (ख़ूब झूठ बोलने वाले) न आ लें उनमें हर एक कहेगा कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ।

हदीसः सुनने तिर्मिज़ी में उक्बा बिन आमिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया यदि मेरे बाद कोई नबी होता तो वह उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 होते। (अर्थात मेरे पश्चात अब कोई नबी न आयेगा)

हदीसः सहीह बुख़ारी में हज़रते सअद बिन अबी वक़्कास रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने हज़रते अली रज़ि0 से कहा कि तुम मेरे साथ ऐसे हो जैसे हारून अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम के साथ, बस अंतर यह है कि मेरे पश्चात कोई नबी नहीं। (अर्थात हारून तो नबी भी थे तुम नबी नहीं हो सकते इसलिए कि नुबूवत समाप्त हो चुकी)।

मुसलमान इस सांसारिक जीवन को क्षणिक (आरज़ी) मानते हैं और मरने के बाद के जीवन को शाश्वत (दाइमी) मानते हैं जिसके दो भाग हैं, क़ब्र का जीवन क़ियामत तक फिर क़ियामत के पश्चात जन्नत के सुख अथवा जहन्नम के कष्ट के साथ सदैव तक, मुसलमानों का विशवास है कि यदि इस्लामिक विशवास शुद्ध न हो तो सांसारिक जनहित के चाहे जितने काम किये जायें उनसे सांसारिक लाभ तो प्राप्त हो सकता है, परन्तु क़ब्र का दुख दूर नहीं हो सकता न जहन्नम के दुख और उसकी आग से छुटकारा मिल सकता है। मुसलमानों का विशवास है कि क़ादियानियों का विशवास इस्लामी नहीं है।

लोकतंत्र शासन में हर धर्म के लोगों को अपने धर्म पर रहते हुए जीवन का अधिकार दिया गया है इस अधिकार के अंतर्गत हमारे देश में कादियानियों को भी फलने फूलने का अधिकार प्राप्त है इसी प्रकार कादियानियों के जनहित के कार्य हमारे शासन को पसन्द हैं जैसे स्कूल, कालेज, हास्पिटल आदि खोलना, इसी प्रकार जन साधारण लोग भी कादियानियों के इन कामों को सराहते हैं इसका एक कारण यह भी है कि वह गैर मुस्लिमों के धर्म को नहीं छेड़ते वह केवल इस्लाम धर्म बिगाड़ने का प्रयास करते हैं। आज तक नहीं सुना गया कि किसी कादियानी ने किसी गैर मुस्लिम को कादियानी बनाया हो। परन्तु जो व्यक्ति कादियानी विशवास रखेगा वह अगले शाश्वत जीवन में जहन्नम की आग से छुटकारा न पायेगा, इसलिए हम मुसलमान अपने भाइयों को कादियानी विशवास से बचाने का अनथक प्रयास करते हैं।

❖❖❖

प्यारे नबी की बातें

—हिन्दी लिपिः गुफ़रान नदवी

प्यारे नबी की प्यारी बातें
सारे जहां से न्यारी बातें
बन्दों को ख़ालिक़ से मिलाया
सहरा को गुलज़ार बनाया
था ईसार का जज़बा ऐसा
जिसने दुन्या का दिल जीता
नफ़रत के सारे बुत तोड़े
टूटे हुए दिल उसने जोड़े
सद्यों की दुशमनी मिटा दी
उलफत की क़िनदील जला दी
इनसां की सीरत को निखारा
अख़लाक़ो किरदार संवारा
क्या क्या बताई गुर की बातें
कैसी कैसी दीं सौग़ातें
जो भी करे माँ–बाप की खिदमत
उसको हासिल होगी राहत
औरत घर आँगन की ज़ीनत
माँ, बहना, बीवी की सूरत
माँ की बताई उसने अज़मत
माँ के पाँव तले है जन्नत
राह से ख़ार व संग हटा दो
अंधों को गिरने से बचा दो
हक़ है पड़ोसी का भी तुम पर
उसे कभी मत समझो कमतर
करो यतीमों पर तुम शफ़कत
उन्हें हो जिससे हासिल राहत
ज़ीस्त की क़द्र व क़ीमत समझो
उसको मत बेसूद गंवाओ
अपने ख़ालिक़ को पहचानो
उसकी सुनो और उसकी मानो
दुन्या एक मुसाफ़िर ख़ाना
दिल न ज़ियादा उससे लगाना
सारे जहां से नियारी बातें
प्यारे नबी की प्यारी बातें

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

उर्दू सीखये –इदारा

सामने लिखी हिन्दी की मदद से उर्दू जुम्ले पढये।

निदा है ग़ैबी सुन इन्सान	ندا ہے غیبی سُن انسان
कान लगा और दे तू ध्यान	کان لگا اور دے تو دھیان
इक अल्लाह पर ला ईमान	اک اللہ پر لا ایمان
वही है ख़ालिक़ और रहमान	وہی ہے خالق اور رحمان
साझी उसका नहीं है कोई	ساجھی اسکا نہیں ہے کوئی
इस पर तेरा हो ईमान	اس پر تیرا ہو ایمان
नबी मुहम्मद नबी हैं आख़िर	نبی محمد نبی ہیں آخر
उन पर उतरा है कुरआन	ان پر اترا ہے قرآن
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम	صلی اللہ علیہ وسلّم
पढ़ यह रब का है फ़रमान	پڑھ یہ رب کا ہے فرمان
नबी के साथी यानि सहाबा	نبی کے ساتھی یعنی صحابہ
उनको नबी का पैरो मान	ان کو نبی کا پیرو مان
रब की रिज़ा है उनको हासिल	رب کی رضا ہے ان کو حاصل
कुरआँ में है ये एलान	قرآں میں ہے یہ اعلان
उनसे हमको दीन मिला है	ان سے ہم کو دین ملا ہے
उनका हम पर है एहसान	ان کا ہم پر ہے احسان
आल और अज़वाजे नबी पर	آل اور ازواج نبی پر
रहमत रब की हो हर आन	رحمت رب کی ہو ہر آن
या रब मैं हूं बन्दा तेरा	یارب میں ہوں بندا تیرا
दूर रहे मुझ से शैतान	دور رہے مجھ سے شیطان
अल्लाह अल्लाह नाम है प्यारा	اللہ اللہ نام ہے پیارا
ख़ालिक़, राज़िक और रहमान	خالق، رازق اور رحمان